thearyasamaj.org

R.N.I. No. 2321/57

ओ३म्

रजि. सं. MTR नं. 04/2013-15

मार्च 2015

अंक 2

तपोभूमि

मासिक

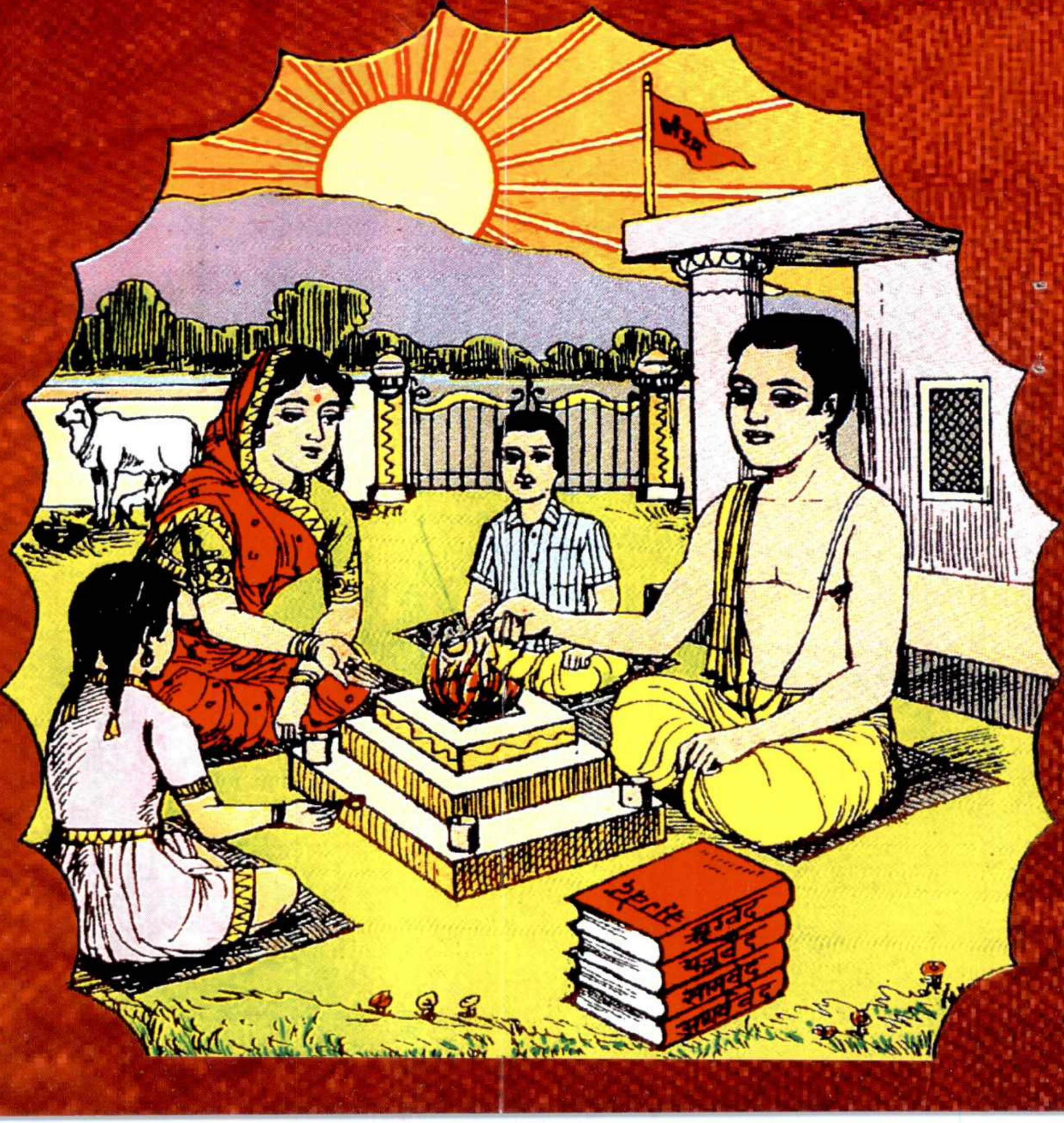

thearyasamaj.org

सम्पादकीय–

ऋषि बोधोत्सव का पर्व वेदमन्दिर मथुरा में उत्साह सहित सम्पन्न

महाशिवरात्रि पर्व को ऋषि बोधोत्सव के रूप में सारा आर्य जगत् मनाता है। वेद मन्दिर मथुरा में इस पावन पर्व पर प्रतिवर्ष 51 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया जाता है। इस परम्परा को इस वर्ष भी आर्यजनों ने उत्साह पूर्वक मनाया। वेदमन्दिर के प्रांगण में आचार्य नरेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में 51 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। गुरुकुल वृन्दावन के ब्रह्मचारी व आचार्यगण ने मिलकर यज्ञ की सारी व्यवस्थाओं में पूर्णनिष्ठा के साथ योगदान दिया। अनेक यज्ञ कुण्डों में प्रज्वलित अग्नि को देखकर व सम्मिलित स्वरों में स्वाहा की गुंजाहट सुनकर ऐसा लग रहा था कि मानो सारा यज्ञीय वातावरण ऋषियों के युग की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत कर रहा हो। बड़े निष्ठापूर्वक यजमानों ने यज्ञ में आहुतियाँ दीं और अपने जीवन को कृतकृत्य किया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेदमंत्रों का पाठ किया। यज्ञ के मुख्य यजमान फरीदाबाद निवासी श्री कृष्णवीर जी शर्मा थे। ज्ञातव्य है कि माननीय शर्माजी ने वेदमन्दिर में दर्शनीय भव्य यज्ञशाला का निर्माण कराया। जिससे संस्था की भव्यता कई गुनी बढ़ गई। यज्ञशाला की भव्यता देखकर याज्ञिक लोगों का हृदय श्रद्धा व उल्लास से भर जाता है। उनके इस कार्य के लिए उपस्थित श्रद्धालुओं के समूह ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। माननीय शर्माजी ने भी बड़ी ही विनम्रता से लोगों के इस धन्यवाद को स्वीकार किया। साथ ही अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि प्रभु की प्रेरणा से ही हमने यह कार्य किया है, हमें जो सामर्थ्य मिला है, वह सब उस परमपिता परमात्मा की असीम कृपा का ही फल है। उन्होंने कहा कि प्रभु ने हमें इस योग्य बनाया इसके लिए हम अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं और ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि हमेंऐसी सत्प्रेरणा दे कि हम अपनी सामर्थ्य का प्रयोग नम्रतापूर्वक राष्ट्र व समाज की सेवा में करते रहें।

इस अवसर पर महाशय कमलदेव जी महारामगढ़ी–मथुरा, महाशय देवीसिंह जी अकबरपुर–मथुरा, कुँवर उदयवीरसिंह जी उसपार–मथुरा, श्री लाखनसिंह जी मालग्राम–मथुरा आदि के सुमधुर भजन हुए। देहाती कवि छाता के निवासी सुघनी प्यारे ने अपनी समसामयिक रचनाओं के द्वारा लोगों को भाव विभोर कर दिया। एक अनपढ़ कवि की रचनाओं को सुनकर प्रभु की विचित्र सृष्टि का दृश्य सामने उपस्थित हुआ। लोगों ने उनकी रचनाओं को खूब सराहा व प्रेरणा ली। गुरुकुल विश्वविद्यालय

शेष पृष्ठ सं. 35 पर

thearyasamaj.org

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–61 संवत्सर 2071 मार्च 2015 अंक 2

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादकः
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

मार्च 2015

सृष्टि संवत्
1960853115

दयानन्दाब्दः 191

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा
(उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाषः
0565–2406431
मोबा. 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4
दयानन्द दिग्विजयम्	–आचार्य मेघाव्रत	5–8
योगेश्वर कृष्ण	–पं0 चमूपति	9–12
श्रद्धात्रय तथा मोक्ष संन्यास योग	–डॉ0 सोमदेव शास्त्री	13
इस्लाम कैसे फैला	–प्रीतम अमृतसरी	14–16
आँसू	–मैथिलीशरण गुप्त	17–18
पाप वर्ग	–श्रीबुद्धगीता से साभार	19
ब्रह्मचर्य पर प्राचीन मत		20–22
भारतवर्ष के साधु	–सदानन्द स्वामी	23–26
दृष्टि दोष दूर करने की सरल विधि	–डॉ0 आर0 एस0 अग्रवाल	27
कर्म	–लक्ष्मीनारायण दीनदयाल	28–31
ईश्वर ने दुनियां क्यों बनाई	–पं0 रामचन्द्र देहलवी	32–34

❁ ❁ ❁

वार्षिक शुल्क 150/ पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

thearyasamaj.org

वेदवाणी

डॉ० रामनाथ वेदालंकार

विजेता वीरों का जयघोष आकाश में गूँजे

उद्धर्षन्तां मघवन्वाजिनान्युद्वीराणां जयतामेतु घोषः।
पृथग्घोषा उलुलयः केतुमन्त उदीरताम्।
देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया।। –अथर्व0 3.19.6

शब्दार्थः–

हे (मघवन्) राष्ट्रधन के धनी राजन्! (वाजिनानि) हस्त्यारूढ़, अश्वारूढ़, रथारूढ़, पदाति योद्धा आदि दल (उद्धर्षन्ताम्) उच्च हर्षध्वनि करें। (जयतां वीराणाम्) जीतते हुए वीरों का (घोषः) जयघोष (उदेतु) ऊपर उठे। (पृथक्) अलग–2 (केतुमन्तः) ध्वजयुक्त (उलुलयः घोषाः) उलु–लु–लु के घोष (उदीरताम्) उठें। (इन्द्रज्येष्ठाः) सेनापतियों को ज्येष्ठ माननेवाले (देवाः मरुतः) विजिगीषु दीप्तिमान् सैनिक (सेनया) सेना बनाकर (यन्तु) युद्ध–प्रयाण करें, आक्रमण करें।

भावार्थः–

हमारे देश के आस–पास के राष्ट्र आतंकवादी गतिविधियों से बाज नहीं आ रहे हैं। वे लड़ाकू विमान भी हमारी सीमा में भेजते हैं, शस्त्रास्त्रों से सन्नद्ध योद्धाओं को भी भेजते हैं, अपने सैनिकों के उपयोग के लिए युद्धसामग्री और खाद्यसामग्री भी प्रेषित करते हैं और उनकी मर्हमपट्टी तथा दवा–दारू के लिए चिकित्सकदल भी तैनात करते हैं। वे हमारे विमानों का अपहरण करते हैं, सवारियों से भरी गाड़ी को बमों से उड़ा देते हैं, टैक्सियों और मोटरकारों के यात्रियों को भून डालते हैं। होटलों और सिनेमाघरों की भीड़ को मौत के घाट उतार देते हैं। आतंकवादी गतिविधियाँ यहाँ तक ही सीमित नहीं हैं। उनके पास ऐसे–ऐसे परमाणु–बम और ऐसी–ऐसी मिसाइलें हैं कि क्षणभर में किसी राष्ट्र को श्मशान बना सकते हैं। हमारे राष्ट्र के अधिकारियों ने उनसे शान्तिवार्ता करने के प्रस्ताव किये हैं, हम शान्तिचर्चा के लिए उनके राष्ट्र में जायें और वे हमारे राष्ट्र में आयें, इन परामर्शों को क्रियान्वित भी किया गया है, किन्तु पतनाला वहीं का वहीं है। वे तो युद्ध की तैयारी कर ही रहे हैं, अब ऐसी स्थिति आ गयी है कि हम भी संग्राम का बिगुल बजा दें। अब सहनशक्ति हार गयी है, धीरज दम तोड़ चुका है। हमारे अन्दर भी न केवल आत्मरक्षा करने का, अपितु विषभरे शत्रु पर आक्रमण करने का भी साहस है। हमारे अन्दर भी शत्रु के राक्षसीपन के मद को चूर कर देने का दम है।

हे मघवन्! हे राष्ट्रधन के धनी राज्याधिपति! हे जल, स्थल और अन्तरिक्ष की सेनाओं के

शेष पृष्ठ सं.16 पर

thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

दयानन्द दिग्विजयम्

लेखकः आचार्य मेधाव्रत

एकादशः सर्गः

ज्ञानभानोर्ममाप्यासावात्मेन्दुः शास्त्रदीधितिम्।
निर्वाणचन्द्रिकामाप्तो जगदानन्ददायिनीम्॥ 73॥

मेरा आत्मारूपी चन्द्र ज्ञान के सूर्यसमान गुरु से शस्त्ररूपी किरणों को पाकर जगदानन्ददायिनी मुक्तिचन्द्रिका को प्राप्त कर चुका है॥ 73॥

ब्रह्मतेजोबलं लब्धं ब्रह्मदाल्लोकशंकरम्।
एकजीवनदानेन कथं स्यात्तस्य निष्क्रयः॥ 74॥

मैंने ब्रह्मदाता गुरुदेव से जगत्–कल्याणकारी ब्रह्मतेज प्राप्त किया है, तो एक जीवनदान से मैं उनका बदला कैसे चुका सकता हूँ॥ 74॥

यावज्जीवमहं लोके तदाज्ञापिपालकः।
यतिष्ये सत्यविद्यानां महिम्नां विस्तृतौ ध्रुवः॥ 75॥

मैं जीवनपर्यन्त उनकी आज्ञा का पालन करता हुआ संसार में सत्यविद्याओं की महिमा के विस्तार करने में ध्रुव समान निश्चल होकर यत्न करूंगा॥ 75॥

धर्मोद्धामहायज्ञे हुत्वा स्वं जीवनं हविः।
दक्षिणां गुरुदेवाय दास्यामि हृदयंगमाम्॥ 76॥

मैं वैदिकधर्मोद्धार रूपी महायज्ञ में अपने जीवनरूपी घृत–सामग्री को होम करके गुरुदेव को मनोनुकूल दक्षिणा दूंगा॥ 76॥

इत्यात्मना प्रतिज्ञाय ज्ञानदातु ऋणादयम्।
मुक्तो भवितुमुत्सेहे दयानन्दो महोदयः॥ 77॥

इस प्रकार महा अभ्युदयशाली दयानन्द अपने अंतकरण में प्रतिज्ञा करके ज्ञानदाता पिता के ऋण से मुक्त होने के लिये उत्सुक हो गये॥ 77॥

अथेशोपासनारीतिं प्रतिमार्चनखण्डनम्।
बोधयन्न्यवसद् देवस्तदामे शरदद्वयम्॥ 78॥

पश्चात् आगरे में सेठ रूपचंद के उद्यान में निवास करते हुए स्वामीजी वैदिक ईश्वरोपासना की

thearyasamaj.org

रीति और मूर्त्तिपूजा-खण्डन आदि विषयों पर लोगों को उपदेश करते हुए दो वर्ष बिताये॥ 78॥

श्रुत्वा ग्वालियराधीशै रायोजितमसौ जपम्।
योगी भागवतस्यायाद् राजधानीं महोत्सवाम्॥ 79॥

एक बार महाराजा ग्वालियर ने देवी भागवत के पारायण का महोत्सव किया था। इसमें दूर-दूर देशों से बड़े-बड़े पण्डित भी बुलाये गये थे। इसलिये इस उत्सव में योगीश्वर दयानन्द भी आ गये॥ 79॥

आह्वास्त शास्त्रिणोऽजस्रं शास्त्रार्थाय सभाजिरे।
परं वादिमृगेन्द्रस्य गर्जनाद् भेजिरे भयम्॥ 80॥

स्वामीजी सभा-आंगन में ही शास्त्रार्थ के लिये उत्सव पर आये। वे निरन्तर शास्त्रियों को आह्वान करते रहे, परन्तु वादियों में सिंहतुल्य स्वामीजी की गर्जना मात्र से वे भयभीत होकर भाग खड़े हुए॥ 80॥

व्याख्यानेषु ततश्चायं लीलां भागवतीं यतिः।
बोधयँल्लोकचेतांसि स्वानुकूलान्यकल्पयत्॥ 81॥

पश्चात् यतिराज दयानन्द ने अपने व्याख्यानों में भागवत लीला की पोल खोलते हुए, जनता को अपनी ओर आकर्षित कर लिया॥ 81॥

निर्भयस्य यमिनो वचोऽमृतं वेदशास्त्रनयसंगतं हितम्।
स्वीचकार जनता नतान्तरा सत्यतां सुहृदया निपीय तत्॥ 82॥

निर्भय यतिवर के वेदशास्त्रानुकूल एवं न्यायसंगत हितकारी वचनामृत का सहृदय जनता ने पान किया, और नतमस्तक होकर उनकी सत्यता को स्वीकार कर लिया॥ 82॥

ततः करौलीनृपराजधानींप्रगम्य तद्राजसभाबुधेन्द्रान्।
विजित्य वादे मुनिरल्पकालं स भ्रदवत्यास्तटमध्यवात्सीत्॥ 83॥

इसके पश्चात् स्वामीजी ग्वालियर से करौली नामक राजधानी को गये। वहाँ के राजपण्डित मणिराम आदि को स्वामीजी ने शास्त्रार्थ में परास्त कर दिया और कुछ काल के लिये भद्रवती नदी के तट पर वास किया॥ 83॥

स्वामिना जयपुरं प्रयाय तत् रामपुण्यविपिने यदा स्थितम्।
ईश्वरात्मविषयेऽनुयुक्तवानात्मवन्तममुमात्मधीर्यातिः॥ 84॥

यहाँ से स्वामीजी जयपुर आये और माली रामपुण्य नामक दारोगा के बाग में ठहरे। यहाँ आत्मवान् परमहंस गोपालानन्दजी ने स्वामीजी से आत्मा-परमात्मा के विषय पर अनेकों प्रश्न किये थे॥ 85॥

प्राप्य युक्तियुतमुत्तमोत्तरं पाण्डितीप्रचुरमस्य योगिनः।
संगमीप्सुरवसत्स संयमी संशयं निरसितुं मुदाऽन्तिके॥ 85॥

योगिराज स्वामीजी के युक्तियुक्त एवं पाण्डित्यपूर्ण उत्तम उत्तर पाकर, इन संन्यासी परमहंस

thearyasamaj.org

ने स्वामीजी की संगति की और आनन्दपूर्वक कुछ दिनों तक स्वामीजी के पास रहते हुए अनेक शंकाओं का निराकरण किया॥ 85॥

सेवार्थं ब्राह्मणास्तत्र स्वामिनो न्यवसंस्त्रयः।
द्विज स सच्चिदानन्दं सूर्यमन्त्रमुपादिशत्॥ 86॥

इस बाग में स्वामीजी की सेवा के लिये तीन ब्राह्मण रहते थे। उनमें से एक सच्चिदानन्द नामक ब्राह्मण था, जिसे स्वामीजी ने सूर्यमंत्र का उपदेश दिया था॥ 86॥

जयपुरेश्वररामनिमंत्रितः श्रवणनाथविनेयमणिर्बुधः।
व्रजसुनन्दनमन्दिरमागतोयमिवरेण समं समभाषत॥ 87॥

जयपुराधीश महाराजा रामसिंह ने श्रवणनाथ के शिष्यरत्न विद्वान् लक्ष्मणनाथ को बुलाया और द्वारकाधीश के मंदिर में श्रीलक्ष्मणनाथ ने यतिवर दयानन्द से बातचीत की॥ 87॥

सकलशास्त्रधुरन्धरतां मुनेरथ यमीश्वरतां स विलोक्य तम्।
विदितवैष्णवशैवकथाहवे कविरयाचत वादसहायताम्॥ 88॥

लक्ष्मणनाथ मुनिवर दयानन्द की अखिल शास्त्रों में धुरन्धरता और संयमशीलता देखकर प्रभावित हो गये और इसलिये भविष्य में होने वाले शैवों और वैष्णवों के विख्यात शास्त्रार्थ-संग्राम में इन्होंने स्वामीजी से सहायता की याचना की॥ 88॥

शास्त्रार्थसंगरे मां चेन्निमन्त्रयितुमिच्छथ।
वित्त बुद्ध्यनुकूलं भो वक्ष्यामीत्यवदन्मुनिः॥ 89॥

स्वामीजी ने कहा कि यदि आप लोग मुझे शास्त्रार्थ में निमंत्रित करना चाहते हैं तो मैं अपनी बुद्धि के अनुकूल सचसच ही कहूँगा। यह आप लोगों को जान लेना चाहिये॥ 89॥

विद्वाँल्लक्ष्मणनाथोऽयं योगिवैदग्ध्यमोहितः।
एवमस्त्वति वागीशनिश्चयं सोऽन्वमन्यत॥ 90॥

विद्वर लक्ष्मणनाथ तो वागीश्वर दयानन्द के पाण्डित्य पर मुग्ध हो चुके थे, इसलिये इन्होंने 'तथास्तु' कहकर वागीश्वर दयानन्द के निश्चय को स्वीकार कर लिया॥ 90॥

प्रश्नान् पंचदश स्वामी प्राहिणोत्पण्डितान्तिके।
ऋते दुर्वचनात्तेभ्यो नैष लेभे तदुत्तरम्॥ 91॥

इसी बीच में स्वामीजी ने कुछ पण्डितों के पास पन्द्रह प्रश्न लिख भेजे। परन्तु उन पण्डितों की ओर से दुर्वचनों के सिवाय और कुछ भी उत्तर न मिला॥ 91॥

दुरुक्तिपत्रादपि देववाचः प्रदर्श्य दोषानयमष्ट तेषाम्।
प्रत्युत्तरं प्रेषितवान् प्रगल्भः पदप्रबोधे प्रथितप्रभावः॥ 92॥

स्वामीजी व्याकरणशास्त्र में विश्रुत कीर्त्ति प्राप्त कर चुके थे। इसलिये प्रगल्भ दयानन्द ने उन

thearyasamaj.org

पण्डितों के संस्कृत में लिखे दुर्वचनपूर्ण पत्र में से आठ अशुद्धियाँ निकालकर उनके पास प्रत्युत्तर भेज दिया॥ 92॥

क्षुब्धं दलेनास्य दलं बुधानां तदाऽऽह्वतेमं तनितुं विवादम्।
व्यासानुरोधेन मुनिः सभायां गत्वाऽजयत्तान् मतिकौशलेन॥ 93॥

इस पत्र से जयपुर का पण्डित–मण्डल क्षुब्ध हो उठा और इन लोगों ने स्वामीजी को शास्त्रार्थ के लिये आह्वान किया। बक्षीराम व्यास के अनुरोध से स्वामीजी सभा में पधारे और उन पण्डितों को अपनी बुद्धि की चतुराई से सहज ही में हरा दिया॥ 93॥

विद्याभिमानिजिनभक्तगुरुं विवादे जैनागमोदितमतैः प्रहितैस्स्वलेखैः।
इन्द्रार्चितांघ्रिकमलो विमलान्तरंगोमौनावलम्बिनममुं व्यतनोन्मुनीन्द्रः॥ 94॥

बड़े–बड़े ऐश्वर्यशालियों एवं विद्वानों से पूजित–चरण–कमल तथा पवित्रान्तःकरण मुनीन्द्र दयानन्द ने जैनियों के गुरु विद्याभिमानी जतीजी को जैन शास्त्रों के प्रमाणों से युक्त अपने भेजे हुए लेखों द्वारा शास्त्रार्थ में चुप कर दिया॥ 94॥

अथाचरौलाधिपकर्णभूषां गताऽस्य कीर्त्ति र्विदुषां वरस्य।
स्वसुन्दरोद्यानविशालशालांनिषेवितुं प्रार्थित एष राज्ञा॥ 95॥

विद्वानों में श्रेष्ठ स्वामीजी की कीर्त्ति कुछ दिनों बाद अचरौल के ठाकुर रणजीतसिंह के कानों तक पहुँची। इसलिये इन्होंने स्वामीजी को अपनी सुन्दर वाटिका में बने सुन्दर भवन में रहने के लिये प्रार्थना–पत्र भेजा॥ 95॥

बृहदारण्यकाद्यास्तास्तत्वोपनिषदः सदा।
शुश्रुवुर्वीरराजन्याः श्रद्धयाऽभाज्जगद्गुरोः॥ 96॥

जगद्गुरु दयानन्द रणजीतसिंह की प्रार्थना स्वीकार कर अचरौल आ गये और यहाँ बृहदारण्यक आदि सत्य उपनिषदों की कथा करने लगे। तब वीर क्षत्रिय लोग बड़ी श्रद्धा से स्वामीजी की कथा सुनने लगे॥ 96॥

अष्टाध्यायीं महाभाष्यं धातुरूपावलिं च सः।
विपश्चित्पाठयामास विद्यार्थिगणमानतम्॥ 97॥

यहाँ विद्वद्वर स्वामीजी के पास भक्तिभाव से अनेक विद्यार्थी भी आते थे। स्वामीजी उन्हें अष्टाध्यायी, धातुरूपावली और महाभाष्य पढ़ाया करते थे॥ 97॥

भ्रमा विलीना हृदयस्य संशयालयं गताः सा प्रतिमार्चनाऽप्यहो।
सुमार्गबोधोऽजनि भूभुजां सतां फलं प्रसूते नहि किं समागमः॥ 98॥

यहाँ स्वामीजी के उपदेशों से क्षत्रियों के भ्रम नष्ट हो गये, हृदय के सारे संशय दूर हो गये, मूर्त्तिपूजा पर से श्रद्धा उठ गई और उन्हें सत्यमार्ग का बोध हो गया। अहा ! सज्जनों की संगति क्या–क्या फल नहीं पैदा करती है ?॥ 98॥

(शेष अगले अंक में)

thearyasamaj.org

योगेश्वर कृष्ण

अश्वमेध

पाण्डव-साम्राज्य की पुनःस्थापना

लेखकः पं. चमूपति

युद्ध की समाप्ति पर वैराग्यवृत्ति का उद्रेक स्वाभाविक था। युधिष्ठिर की प्रकृति में वैराग्य की वृत्ति का प्राबल्य था। उसे सबसे अधिक शोक हुआ। कर्ण उसका भाई था, इस बात का पता उसे अपनी माता से अभी-युद्ध के पश्चात् लगा। पर अब तो हाथ मलने के सिवाय और चारा ही क्या था? उसके चारों भाई, द्रौपदी, कृष्ण, व्यासादि सभी अपना-अपना दु:ख भूल गए और युधिष्ठिर को सान्त्वना देने लगे। वन जाने की अपेक्षा घर में रहना, और राज-धर्म का पालन करना श्रेष्ठ है-प्रकृति-धर्म का यह गुर समझाने की उसे आवश्यकता हुई। श्रीकृष्ण ने सलाह दी कि भीष्म जब से घायल हुए हैं, कुरुक्षेत्र के मैदान ही में डेरा लगाए हुए हैं, उनके चरणों में पहुँचना चाहिए। सम्भवतः उनकी अवस्था हस्तिनापुर जाने के योग्य न थी या 'महाभारत' के कथनानुसार उनकी अपनी इच्छा ही रणभूमि में प्राण त्यागने की थी। उनके पास जाने की मन्त्रणा देते हुए श्रीकृष्ण ने कहा-"भीष्म ने संसार को खूब देखा है। राजाओं की कई पीढ़ियाँ उनके सामने से गुजरी हैं। नीति तथा धर्म का जितना विस्तृत और गम्भीर ज्ञान वे रखते हैं, किसी अन्य को उसका एक अंश भी उपलब्ध हो सकना सम्भव नहीं। ज्ञान के इस अथाह समुद्र से कुछ कण यदि प्राप्त हो सकते हैं वे अभी युधिष्ठिर आदि को उपदेश उन्हीं से लेना चाहिए।"

वनवास के पश्चात् युधिष्ठिर अब फिर राज्य का अधिकारी हुआ था। उसका फिर से अभिषेक हुआ और वह भीष्म के चरणों में उपदेशार्थ उपस्थित हुआ। श्री कृष्ण तथा पाण्डव और सात्यकि आदि सभी साथ थे। भीष्म जब तक जीवित रहे, मनोहर कथाओं के रूप में अपने अनुभव का सार उक्त श्रोतृ-मण्डल के कर्ण-गोचर कराते रहे। भीष्म का वह उपदेश शान्तिपर्व के रूप में 'महाभारत' के पृष्ठों में सुरक्षित है। जैसे हम एक बार पहले भी कह चुके हैं, शान्तिपर्व संसार के समाजशास्त्र-विषयक साहित्य में ऊँचा आदर का स्थान पाने का अधिकारी है। इस समय आवश्यकता है उसे आधुनिक रीति से सम्पादन करने की।

जब तक भीष्म के मुखविन्द से इस ज्ञान-गंगा का अटूट प्रवाह चलता रहा, युधिष्ठिर को भी शान्ति रही, दूसरों का धीरज भी नहीं टूटा। परन्तु भीष्म की तो उसी घायल अवस्था में मृत्यु हो गई। अब

thearyasamaj.org

युधिष्ठिर और व्याकुल हुए। व्यास ने समझाया-तुम्हें अश्वमेध करना चाहिए। यही सम्मति श्रीकृष्ण की थी।

अश्वमेध आर्य-राजाओं का एक पुराना यज्ञ है। अश्व राज्यशक्ति का द्योतक है। शतपथ ब्राह्मण में कहा है-क्षत्रं वाऽश्वः (13.2.2.153) जो क्षत्रिय अपने-आपको सबसे अधिक बलवान् समझता है, वह एक घोड़े को आगे लगाकर सब राष्ट्रों में फिर आता है। सेनाएँ भी उसके साथ रहती हैं। जो राष्ट्र उसकी प्रमुखता को स्वीकार करते हैं, वे उसे बिना विरोध के अपनी परिधि में से गुजर जाने देते हैं, उसके घोड़े की पूजा करते हैं और उसे कर देते हैं। जिन्हें उसकी वीरता का सिक्का स्वीकार नहीं होता, वे घोड़े को रोक लेते हैं। उनसे उसका युद्ध होता है। यदि वह जीत जाय तो वे उसकी अधीनता स्वीकार कर लेते हैं।

यह अश्वमेध अपनी वैयक्तिक वीरता का सिक्का बैठाने के लिए भी किया जाता है और अपने राष्ट्र का साम्राज्य अन्य राष्ट्रों पर स्थापित करने के लिए भी। युधिष्ठिर के अश्वमेध का उद्देश्य साम्राज्य की स्थापना था। महाभारत के युद्ध में विजय तो पाण्डवों ही की हुई थी, परन्तु प्रत्येक राष्ट्र की ओर से इनके सम्राट् माने जाने का अवसर इस युद्ध के साथ-साथ नहीं आ सका था। राजसूय के पश्चात् पाण्डवों को वनवास मिल गया था। बना-बनाया साम्राज्य झटपट नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। उसे फिर से स्थापित करने के लिए आवश्यक था कि फिर से दिग्विजय की जाय। अश्वमेध इसी विजय का वैध रूप था।

व्यास ने युधिष्ठिर को इस अश्वमेध के समारम्भ से पूर्व हिमालय की घाटियों में छिपे एक महान् धन-कोष का पता दिया। महाभारत के भयंकर युद्ध ने राष्ट्र को धन-विहीन बना दिया था। वह क्षति इस कोष की प्राप्ति से सहज ही में पूर्ण हो गई।

अर्जुन ने यज्ञीय अश्व के अनुसरण की विधिपूर्वक दीक्षा ली और वह भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में सेना-समेत प्रविष्ट हुआ। राष्ट्रों की सेनाएँ प्रायः कौरव-दल के साथ मिलकर पाण्डव-दल से पराजित हो चुकी थीं। किरात, यवन, म्लेच्छ जो दुर्योधन की ओर से लड़े थे, वे तो अभी विरुद्ध थे ही। इनके अतिरिक्त कई आर्य राजा भी अर्जुन की शक्ति की परीक्षा लिये बिना साम्राज्य में सम्मिलित नहीं हुए।

युधिष्ठिर ने अर्जुन से साग्रह अनुरोध किया था कि जहाँ तक हो सके, दिग्विजय बिना रक्तपात के की जाय। विशेषतया स्वयं राजाओं की हत्या न ही हो तो उत्तम है। यह इसलिए कि साम्राज्य का आधार पाशविक बल नहीं, पारस्परिक प्रेम और समझौते ही को बनाना इष्ट था।

प्रायः वे आर्य राजा ही अर्जुन के रास्ते में बाधक हुए जिनके पिता या ज्ञाति युद्ध में पाण्डवों के हाथों मारे गए थे। उदाहरणतया त्रिगर्त (जालन्धर के राजा) जिन्होंने युद्ध के समय संशप्तक-दल के रूप में अर्जुन को अन्त समय तक एक अलग उलझन में उलझाए रखा था। इस समय इनका राजा सूयवर्मा था। अर्जुन के साथ उसका युद्ध हुआ, परन्तु अन्त को सारे त्रिगर्त-राष्ट्र ने अपने-आपको अर्जुन के चरणों में डाल दिया।

प्राग्ज्योतिष (असम) का राजा इस समय भगदत्त का पुत्र वज्रदत्त था। उसे अर्जुन के हाथों भगदत्त के मारे जाने का गुस्सा था। उसके साथ तीन दिन मुठभेड़ रही। अन्त को अर्जुन के प्रहार से वह

thearyasamaj.org

पृथिवी पर जा पड़ा। परन्तु अर्जुन ने अपने बड़े भाई की आज्ञा का पालन कर उसके प्राणों की रक्षा की और उसे प्रीतिपूर्वक अश्वमेध में आने का निमन्त्रण दिया।

सिन्धुराज जयद्रथ की हत्या अर्जुन, अभिमन्यु का बदला लेते हुए कर चुका था। जयद्रथ के लड़के सुरथ का भी इससे पूर्व शोकवश प्राणान्त हो गया था। सिन्धुराष्ट्र के योद्धाओं ने अर्जुन का रास्ता रोका। उनसे भयंकर लड़ाई ठन गई। परन्तु सेनाओं के घोर संहार की ताब न लाकर अन्त को जयद्रथ की रानी, धृतराष्ट्र की लड़की दुःशला अपने पोते को साथ लिये अर्जुन के सम्मुख आई। अर्जुन ने गाण्डीव रख दिया। दोनों की आँखों में आँसू आ गए। दुःशला ने कहा–'जैसे अभिमन्यु का लड़का परीक्षित पाण्डव-वंश का एकमात्र अवलम्ब है, वही दशा इस सुरथ के जाये की हमारे घर में है। मैं इसके प्राणों की भिक्षा माँगती हूँ।' अर्जुन ने बहिन को गले लगा लिया और जयद्रथ के पोते को दूसरे राष्ट्रों के राजाओं की तरह युधिष्ठिर का प्रेम और शान्ति का संदेश दिया।

मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा अर्जुन की धर्मपत्नी थी। सुभद्रा से विवाह करने से पूर्व तीर्थाटन करते हुए अर्जुन मणिपुर भी पहुँचा था और चित्रांगदा से उसका पाणिग्रहण हुआ था। इस विवाह में शर्त यह थी कि चित्रांगदा रहेगी अपने पितृकुल ही में, और उसकी सन्तान वहीं के राजसिंहासन की उत्तराधिकारिणी होगी, अर्थात् वह विवाह मणिपुर के राजवंश के चलाने के लिए ही हुआ था।

इस समय वहाँ का राजा बभ्रुवाहन स्वयं अर्जुन का पुत्र था। वह प्रेमपूर्वक पिता के दर्शनार्थ अगुवाई को गया। अर्जुन ने उसे डाँटा कि तूने मेरा नाम कलंकित किया है। जब मैं विजय-यात्रा को निकला हूँ तो तुझे सशस्त्र मेरा मुकाबिला करना चाहिए था। इस पर बभ्रुवाहन ने शस्त्र ग्रहण कर अर्जुन को ललकारा। दोनों में बड़े जोरों का युद्ध हुआ। अन्त को दोनों अचेत होकर गिर पड़े। चित्रांगदा चिन्तित हुई, परन्तु पहले तो बभ्रुवाहन और फिर अर्जुन सचेत हो उठ खड़े हुए और उनमें सन्धि हो गई। बभ्रुवाहन ने माता-समेत अश्वमेध में आना स्वीकार किया।

मगध का राजा इस समय जरासन्ध का पोता, सहदेव का पुत्र मेघसंधि था। उसने अर्जुन का रास्ता रोका और खूब पराक्रम प्रदर्शित किया। विजय अर्जुन की रही। उसे भी अर्जुन ने क्षमा कर भाई के अश्वमेध में निमंत्रित किया।

इसके पश्चात् अर्जुन चेदियों की राजधानी शुक्तिमती, काशी, कोशल, अंग, किरात, तंगण, दशार्ण, निषादराज एकलव्य के राज्य इत्यादि इन सब राष्ट्रों में प्रविष्ट हुआ। इनमें से किसी-किसी जगह तो युद्ध हुआ और कहीं-कहीं स्वयं राष्ट्रपतियों ने अधीनता स्वीकार कर ली। द्रविड़ों, आन्ध्रों, औड्रों, माहिष्कों और कौल्वगिरि के रहनेवालों से लड़कर अर्जुन ने इन सबको अपने पक्ष का किया। तब सुराष्ट्र से होता हुआ प्रभास पहुँचा। वहाँ से द्वारवती गया। वासुदेव समेत, आनर्त्तराज उग्रसेन ने अर्जुन का स्वागत कर यज्ञिय घोड़े का यथाविधि सत्कार किया।

द्वारवती से पंचनद और पंचनद से गान्धार प्रयाण कर अर्जुन ने भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर

thearyasamaj.org

अपनी विजय–यात्रा की इतिश्री की। शकुनि के पुत्र के हृदय में अपने पिता के वध का शूल अभी विद्यमान था। वह सेना–सहित सामने आया। परन्तु हारकर अश्वमेध में आना मान गया। यहाँ भी शकुनि की पत्नी ने बीच में पड़कर शान्ति कराई। अर्जुन ने उस देवी की पूजा की और कहा–"आपका लड़का मेरा भाई है। अश्वमेध से हमारा अभिप्राय पुराना शूल मिटाना है, नया वैमनस्य बढ़ाना नही।"

वास्तव में अश्वमेध यज्ञ किया ही इसलिए गया था कि महाभारत के युद्ध से जो भारत दो भागों में बँट गया था, वह फिर से एक हो जाय; अनेक राष्ट्रों के राजाओं की हत्याओं आदि से जो पाण्डवों के विरुद्ध, असंख्य राजवंशों के मनस्वी वीरों के हृदयों में गहरे घाव लग गए थे, उन्हें सान्त्वनापूर्वक भर दिया जाय। युधिष्ठिर को इस यज्ञ द्वारा यह दिखाना था कि पाण्डव बलवान् तो हैं, परन्तु उनका बल अत्याचार के लिए नहीं, बिखरे राष्ट्रों को मिलाने, उन्हें परस्पर प्रेम–सूत्र में पिरोकर साम्राज्यरूपी एक माला के रूप में संगठित कर देने, उनकी बिखरी शक्तियों को एक–दूसरे के विरोध में नष्ट न होने देने ही नहीं, अपितु उन सबके संयोग से समूचे भारत को शक्तिशाली बनाने के लिए है।

जब युधिष्ठिर ने सुना कि अर्जुन यज्ञिय घोड़े–सहित भारत की प्रदक्षिणा कर हस्तिनापुर लौट रहा है, तो इन्होंने यज्ञ की तैयारी की। सोने के घड़े, कलश, पात्रियाँ, कटक, मटके, लकड़ी के यूप जिन पर खूब सोना जड़ा था, इत्यादि सब सामग्री एकत्रित हुई। स्थल तथा जल दोनों विभागों के पशु लाए गए। अन्न के ढेर लग गए–गोदाम भर गए। दूध–दही तथा घी आदि की नदी बह निकलीं।

बलदेव–समेत श्री कृष्ण इस यज्ञ में पधारे। अभी अर्जुन यात्रा से लौट ही रहा था। द्वारवती में वह कृष्ण से मिल चुका था। युधिष्ठिर ने वृष्णिकुल के कुशल–सम्बन्धी प्रश्न पूछकर अर्जुन का समाचार पूछा। कृष्ण ने अर्जुन की ओर से सन्देश दिया कि यज्ञ का सब ठाठ समारोह–पूर्वक किया जावे, परन्तु एक बात का विशेष ध्यान रहे कि राजसूय की तरह इस यज्ञ में अर्घ्यहरण के सदृश, किसी के लिए कोई अपमान–सूचक, अनर्थ की बात न हो जाय। सब राजाओं का सत्कार पूर्ण सावधानी से पूर्ण विनय–पूर्वक हो। कहीं राजाओं से द्वेष से फिर प्रजाओं का नाश न हो।

–(शेष अगले अंक में)

पाठकों से नम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के उन पाठकों से निवेदन है जिन्होंने वर्ष 2014 का वार्षिक शुल्क 150/– एक सौ पचास रुपये अभी तक जमा नहीं कराया है वे शीघ्र ही **'सत्य प्रकाशन'** के पते पर कार्यालय को भेजकर जमा करायें ताकि पत्रिका सुचारू रूप से आपको प्राप्त होती रहे।

–व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

श्रद्धात्रय तथा मोक्ष संन्यास योग

लेखकः डॉ० सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

अर्जुन का मोह नष्टः–

श्रीकृष्ण अंत में अर्जुन से पूछते हैं कि "हे अर्जुन ! क्या तूने एकाग्रचित्त होकर यह सब कुछ सुना है? अज्ञान के कारण जो तुझे मोह उत्पन्न हो गया था, आसक्ति हो गयी थी वह मोह दूर हुआ है या नहीं? श्री कृष्ण ने अपने तर्क-प्रमाण और अनुभव के द्वारा अर्जुन के मोह को दूर करने का प्रयत्न किया। अर्जुन का मोह दूर हो गया है या नहीं इस विषय में श्री कृष्ण अर्जुन से पूछ रहे हैं। अर्जुन उनको उत्तर देते हुए कहता है कि "हे श्री कृष्ण! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है मुझे अपने स्वधर्म अर्थात् क्षात्र धर्म की स्मृति फिर से प्राप्त हो गयी है। मेरा सन्देह दूर हो गया है, चंचलता समाप्त हो गयी है। चित्त स्थिर हो गया है अब मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि आपके कहने के अनुसार मैं अवश्य ही अपना कर्म अर्थात् युद्ध करूँगा। मोहवश व्यक्ति कितना कमजोर हो जाता है। मनुष्य के विचारों का प्रभाव उसके शरीर पर कितना पड़ता है यह गीता के प्रथम अध्याय से ज्ञात होता है कि अर्जुन जैसा योद्धा जिसके धनुष की टंकार को सुनकर शत्रुओं में भगदौड़ मच जाती थी। जिसके नाम से शत्रु घबराते थे, वहीं अर्जुन मोहग्रस्त होने पर कांपने लगता है, **धनुष उसके हाथ से खिसकने लगता है।** शरीर रोमांचित हो जाता है और **युद्ध के मैदान में खड़े रहने में भी असमर्थ हो जाता है।** इस मोहग्रस्त अर्जुन का मोह दूर करने का प्रयास श्री कृष्ण ने किया और उपदेशों को सुनाकर घबराये हुए, **डरपोक कांपनेवाले, अर्जुन को** फिर अपने क्षात्र धर्म एवं क्षत्रियोचित कर्मों का स्मरण कराते हुए **युद्ध के लिये कटिबद्ध किया।** तब अर्जुन वीरता भरे शब्दों में कहता है कि "अब मेरा मोह नष्ट हो गया है और अब मैं अवश्य ही युद्ध करूँगा, शत्रुओं को मारूँगा। अन्याय और अत्याचार करने वालों को दण्ड दूंगा।" पुनः उसने गाण्डीव धनुष उठा लिया है और युद्ध की घोषणा कर दी।

आध्यात्मिक ज्ञान की महत्ता:–

युद्ध के मैदान से भागनेवाले व्यक्ति आत्मा और परमात्मा की बातों को सुनकर युद्ध के लिए कटिबद्ध हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य को अपने कर्तव्य के लिए प्रेरित करता है, न कि मनुष्य को आलसी निकम्मा बनाता है। जो लोग यह आक्षेप करते हैं कि आत्मा-परमात्मा की बातें करनेवाले दुनियां से भागते हैं, उनके लिये गीता एक अद्भुत उदाहरण है कि **मनुष्य भागता नहीं बल्कि अन्याय-अत्याचार को दूर करने के लिये कटिबद्ध हो जाता है।**

शेष पृष्ठ सं. 16 पर

thearyasamaj.org

इस्लाम कैसे फैला

लेखकः- प्रीतम अमृतसरी

जीवन चरित्र श्री गुरु गोविन्दसिंह जी

(लेखक: श्री ला0 दौलतराय जी)

मुहम्मद कासिम –

इसने हिन्दुओं का सर्वनाश किया। सिन्धु नरेश राजा बाहर की **दो पुत्रियों तथा अन्य कई स्त्रियों को पकड़कर बगदाद में, जहाँ कि वह रहता था, ले गया, और वहाँ जाकर उन्हें खलीफा के रणवास में प्रविष्ट किया।** (तवारीखि खालसा प्रथम भाग)

कुतबुद्दीन ऐबक–

इसने मन्दिरों तथा मूर्त्तियों को तोड़ा। उनके स्थान पर मस्जिदें बनवाईं। केवल कालज्जर नगर में **113 मन्दिर गिरवाए सहस्रों हिन्दुओं का वध किया, और सहस्रों को गुलाम बनाया।** (तबकाति नासिरी)

बिहार प्रदेश की विजय में कुतबुद्दीन ऐबक ने **एक लाख ब्राह्मण कत्ल करवाये और हिन्दुओं का कदीमी कुतबखाना जला दिया।** (तवारीखि अलाई)

अलाउद्दीन खिलजी–

इसने कम्बात के गिर्दो नवाह में इस कदर हिन्दू कत्ल किये कि रक्त की नदियां बह निकलीं। सहस्रों बच्चों तथा **20000 सुन्दरियों को गुलाम बनाकर अपने देश को भेजा। यह भी हुकम दिया कि हिन्दुओं के पास केवल खाने को अन्न औरर तन ढांपने को साधारण कपड़े रहें शेष यत्किंचित् भी हो वह मुसलमानों को दे दिया जाय, क्योंकि हिन्दू काफिर हैं।**

उसने दौलताबाद को ऐसा बरबाद किया कि कुत्ता बिल्ला न छोड़ा। अन्धों को घोड़ों की दुम के साथ बँधवा कर (और घोड़ों को दौड़ाकर) मरवाया। (तजकरतुल उमरा लेखक मीर अब्दुला खान)

शहर पटना को उसने खाक में मिला दिया और कौलादेवी को बलात्कार से अपने रणवास में दाखिल किया। (तवारीखि हिन्दुस्तान)

जलालुद्दीन खिलजी–

इसने समस्त मालवा प्रदेश उजाड़ा और हिन्दुओं के पास मिट्टी के बर्तनों के अतिरिक्त कुछ भी न छोड़ा। **20000 युवती स्त्रियों और पुरुष तथा बच्चे मुसलमानों में पारितोषिक के रूप में बाँटे गये।**

thearyasamaj.org

14000 हिन्दू सन्तों के सिर कटवाकर किले की दीवारों पर रखवाये। प्रत्येक पर पृथक्–2 दीपक जलवाये; और फिर उन्हें नदी में फेंक दिया गया। (अमीर खुसरो)

फिरोजशाह–

इसने नगरकोट कांगड़ा विजय करते हुए हिन्दुओं का सर्वनाश किया। **मूर्त्तियों को तोड़ा उन पर गो माँस बँधवा दिया, और 13000 मूर्त्तिपूजक हिन्दुओं के मुख में गो माँस दिलवाकर उनका वध कर दिया गया।** (तवारीखि फरिश्ता)

गियासुद्दीन–

इसने राणा मल्ल भट्टी की पुत्री को जबरदस्ती पकड़कर मुसलमान बनाया और अपने विवाह में ले लिया। (स्वानिह उमरी श्री गुरु गोविन्दसिंह जी)

इसी बादशाह के समय में जैसलमेर में 8000 और बठिण्डा में 24000 स्त्रियों ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिये अग्नि में प्रवेश करना स्वीकार किया। (तवारीखि फरिश्ता)

तैमूर–

इसने दीपालपुर के 5000, अयोध्या के 14000 और काशी के 20000 हिन्दुओं को कतल करवाया। **उनके स्त्री बच्चों को लौण्डी गुलाम बनाकर सैनिकों में तकसीम किया।** भटनेर शहर में **29000 हिन्दुओं को एक मकान में बन्द रखा और आग लगवा दी,** और आग से भागते हुए 10000 को कतल करवाया। 150000 तुर्की सैनिकों को लूट मार पर नियत किया गया। वे देहली में बड़े अहंकार से कहता था कि चाहे पहिले भी लाखों हिन्दुओं का वध कर चुका हूँ, परन्तु फिर भी शान्ति से बैठना कठिन हो रहा है क्योंकि मैं तो हिन्दुस्तान में केवल हिन्दुओं का सर्वनाश करने ही आया हूँ। (तवारीखि फरिश्ता)

शहाबुद्दीन तथा महमूद–

इसने उस कन्नौज को लूटकर तबाह किया था जिसमें 20000 केवल पनवाड़ियों (पान बेचने वालों) की दुकानें थीं। (तोजकि बाबरी)

शमसुद्दीन–

इसने शहर भीलसा का एक मन्दिर गिराया जो कि 105 गज ऊँचा और इससे अर्ध प्रमाण लम्बा चौड़ा था। इस मन्दिर की रक्षा करने वाले हिन्दु वीरों को मृत्यु शैया सुलाया गया। मीर अन्ततः वहां मस्जिद बना दी गई। मअसूम लिखते हैं कि आरम्भ में इस्लामी विजेताओं ने यह हुकम दे रक्खा था कि हिन्दु उमदा कपड़ा न पहिनें, अच्छे खाद्य पदार्थ न खायें, घोड़े पर सवार न हों, दो मंजिला मकान न बनवायें, खूबसूरत लड़का–लड़की न रक्खें, यदि ऐसे पुत्र–पुत्रियां उत्पन्न हो जायें तो मुसलमानों के हवाले कर दें तथा पखाना का मुँह पश्चिम की ओर न रक्खें। (अमीर खुसरो)

खलीफा–

इसका यह हुकम था **हिन्दू काफिरों को आराम न लेने दो। जहां तक हो सके उन्हें मजहब**

thearyasamaj.org

इस्लाम में लाओ अन्यथा कतल कर दो। (चच्च नामा)

समुद्र के मार्ग से सिन्धु देश पर अरब वालों का आन आरम्भिक समयों में प्रथम खलीफा उमर के जमाने में हुआ। और गालिब यह है कि सिन्धु देश की सुन्दर स्त्रियों के हरणार्थ उन लुटेरों ने यह विचार किया होगा।

जब मुहम्मद कासिम ने बमुकाम देवल प्रथम मन्दिर और किला फतह किया तो उसने पहले पहल यह **इच्छा प्रकट की कि ब्राह्मणों का खितना किया जावे, जब उन्होंने स्वीकार न किया तो हुकम सुनाया गया कि 17 वर्ष की आयु से अधिक वयस्क सबको कतल कर दिया जाय, और बाकी लौण्डी गुलाम बनाकर बगदाद भेज दिये जायँ।**

महमूद ने महावन के राजा के साथ सुलह का इकरार करके फिर धोखा किया और कई हिन्दू कतल किये गये। **पंजाब के गक्खड़ों और गजनी के पूर्व में रहने वाले हिन्दुओं को शहाबुद्दीन गौरी ने बलात्कार से मुसलमान किया। उसने मेवात में एक लाख हिन्दु कतल किये।**

मुबारिक शाह खिलजी–

इसने देवगढ़ के राजा हरपालदेव की जीवित खाल खिंचवाई।

कुतबसाहिब की लाठ के पास एक मन्दिर था। कुतबुद्दीन ने उसकी मस्जिद बनवा ली। (उदु तवारीखि इन्फिन्सटन साहिब) ❁❁❁

पृष्ठ सं. 13 का शेष–

सफलता का कारण ब्रह्म और क्षात्र शक्तिः–

गीता के अन्तिम श्लोक में गीताकार ने स्पष्ट किया कि **जहां ब्राह्मण और क्षत्रिय मिलकर रहेंगे वहां निश्चितरूप से विजय होती है।** शारीरिक बल और बौद्धिक बल दोनों ही सफलता के लिये आवश्यक हैं। यही इस श्लोक में बताया गया है कि जहां योगेश्वर श्री कृष्ण और जहां धनुर्धारी अर्जुन है वहीं श्री होगी, विजय, विभूति होगी वहीं अचल नैतिकता होगी यह मेरी निश्चित धारणा है। वेद में भी यही उल्लेख है कि **ब्राह्मण और क्षत्रिय जिस राष्ट्र में मिलकर कार्य करते हैं वह राष्ट्र सम्पन्न रहता है,** वही सफलता प्राप्त करता है। इस प्रकार गीता ने अद्भुत रहस्यों को सरलता से प्रस्तुत किया है। ❁❁❁

पृष्ठ सं.4 का शेष–

सेनानियो! कूच करा दो अपने हस्त्यारूढ़, अश्वारूढ़, रथारूढ़ तथा पदाति वीर योद्धाओं के दलबल को, कूच करा दो सैनिक विमानों को, सैनिक जलपोतों को, सैनिक बुलडोजरों को। भिड़ जाओ शत्रुओं से, हर्षध्वनि करो विजय की, आकाश में गूँज उठे विजयी वीरों का जयघोष। तुम्हारे राष्ट्रध्वज ऊपर उठें, उ-लु-लु की विजयसूचक ध्वनियाँ और स्वदेश के उत्कर्ष के नारे बुलन्द हों। सेनापतियों को ज्येष्ठ माननेवाले विजिगीषु जोशभरे देदीप्यमान सैनिक शत्रुओं पर आक्रमण कर दें, शत्रु के आक्रमण को विफल कर दें। वे शत्रुओं की भूमि को जीत लें, शत्रु के कल-कारखानों को जीत लें, शत्रु के शस्त्रागारों को जीत लें। शत्रु यदि हथियार डालकर आत्मसमर्पण कर देता है, तो उसके आत्मसमर्पण को स्वीकार करें तथा उससे यथायोग्य व्यवहार करें। यह भी ध्यान रखें कि उद्देश्य विश्वशान्ति है, नर-संहार उद्देश्य नहीं है। ❁❁❁

thearyasamaj.org

आँसू

रचयिताः कविवर मैथिलीशरण गुप्त

नेत्र-गंगा में नहा लो मानवो !
पाप-तापों को बहा लो मानवो !
आँसुओं का दान करके लोक में-
कारुकिक कृती कहा लो मानवो !

अश्रु क्या है, तनिक पहचानो उन्हें;
क्षार जल के बिन्दु मत मानो उन्हें।
स्वर्ग की शुचिता उन्हीं में है यहाँ,
अकृत के अनुभूत कण जानो उन्हें॥

ताप जब जग का सहा जाता नहीं,
घन बरसते हैं, रहा जाता नहीं।
भूमि होती है तुरन्त हरी भरी,
देख लो, वह सब कहा जाता नहीं॥

देखते हो व्योम-भूषण-सम जिन्हें,
प्रिय नहीं नक्षत्र वे शुचितम किन्हें।
"कुछ कहें उन नैश दीपों को सुधी,
प्रकृति-करुणा-कण कहेंगे हम उन्हें॥

ओस के वे रत्न देखे हैं कभी?
गोद भरते हैं सुमन जिनसे सभी।
हैं तुम्हारे लोचनों में भी वही,
विश्व के भांडार भर जावें अभी॥

स्वाति-जल को सीप का मुँह खुल रहा;
और चातक भी उसी पर तुल रहा।
पर तुम्हारे एक ही दृग-बिन्दु से,
देख लो, सब लोक का मुँह धुल रहा!॥

thearyasamaj.org

"उमड़ कर जब प्रभु-पदों तक जायगा,
सुरसरी का रूप लेकर आयगा"।
एक ही उस विमल दृग-जल-बिन्दु में,
मुक्ति होगी, भव-जलधि लय पायगा॥

हृदय का अभिषेक आँखों से करो,
राजराजेश्वर बनोगे हे नरो !"
यदि न ऐसा कर सके तो कुछ बनो,
कुछ नहीं, जीते रहो चाहे मरो॥

नष्ट हो त्रैताप लोचन-वृष्टि में,
दीन क्यों हो मोतियों की सृष्टि में?
भोगते हैं ईश भी याचक बनें,
उस तुम्हारी एक करुणा-दृष्टि में !॥

"नेत्र मुक्ताहार जो पहना नहीं,
पत्थरों की बात मत कहना नहीं"
और तुम यह भी न कहना अन्त में-
रह गया सब हाय! यह गहना यही॥

❀❀❀

महापुरुषों की जयन्ती

छत्रपति शिवाजी	8 मार्च
डॉ0 राममनोहर लोहिया	22 मार्च
झूलेलाल	22 मार्च
हेमू कालानी	23 मार्च
श्री रामचन्द्र	28 मार्च

विश्व महिला दिवस	8 मार्च
विश्व ग्राहक दिवस	15 मार्च
विश्व अपंग दिवस	21 मार्च
सृष्टि संवत्सर	21 मार्च

महापुरुषों की पुण्यतिथि

सरोजनी नायडू	2 मार्च
बाबा पृथ्वीसिंह आजाद	5 मार्च
पं0 गोविन्दबल्लभ पंत	7 मार्च
सावित्रीबाई फुले	10 मार्च
पं0 लेखराम	12 मार्च
पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी	19 मार्च
शहीद सरदार भगतसिंह	23 मार्च
शहीद राजगुरु, सुखदेव	23 मार्च
गणेश शंकर विद्यार्थी	25 मार्च
भाई काका	31 मार्च

thearyasamaj.org

पाप वर्ग

–श्रीबुद्धगीता से साभार

भगवान बुद्ध के चिरंजीव राहुल की अवस्था 12 वर्ष की थी। पूज्य गुरुदेव जी एक दिन उसे इस प्रकार उपदेश दिया–

"यदि मनुष्य को शुभ काम करने की उतावल है तो उसे अपने विचारों को बुराई से दूर रखना चाहिये। यह मनुष्य सुस्ती से किसी शुभ काम को करता है तो उसका मन बुराई में सुख मानता है।

यदि मनुष्य एक बार पाप को कर बैठे तो उसे दुबारा वह पाप न करना चाहिये, उसे पाप करने में मजा मानना उचित नहीं। दुःख बुरे कर्म का परिणाम है।

पापी पुरुष–जब तक कि उसका पाप बुरे फल देने लायक नहीं होता–अपने उस पाप में सुख मानता है, लेकिन जब उसका पाप फल देने के काबिल हो जाता है तब पापी को बुराई का भान होता है।

साधु पुरुष के अच्छे कर्म जब तक शुभ परिणाम नहीं लाते तब तक उसे भी बुरे दिन देखने पड़ते हैं, लेकिन जब उसके शुभ कर्म परिपक्व हो जाते हैं तब वह सुख के दिन देखता है।

किसी पुरुष को दिल्लगी के तौर पर भी अपने दिल में ख्याल करके कि इसका मेरे ऊपर कुछ भी असर न होगा बुराई नहीं करनी चाहिये, क्योंकि जैसे एक बूँद जल गिरने से पानी का घड़ा भर जाता है उसी प्रकार थोड़ा–थोड़ा संचय करने पर भी मूर्ख मनुष्य बुराई से भर जाता है।

अपने दिल में यह विचार कर कि इसमें मुझे कुछ लाभ न होगा किसी पुरुष को हल्केपन से भलाई की ओर न देखना चाहिये क्योंकि जैसे एक–एक बूँद जल गिरने से पानी का घड़ा भर जाता है उसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि वह पाप कर्म से बचे।

जिसके हाथ में घाव नहीं है वह विष को हाथ से छू सकता है, जिसके घाव नहीं है विष उस पर कुछ असर नहीं कर सकता, उसी प्रकार जिसने बुराई नहीं की उस पर बुराई का कुछ असर नहीं पड़ सकता।

यदि मनुष्य किसी निर्दोष, सदाचारी और बेगुनाह पुरुष को सताता है तो उसका वह बुरा कर्म लौटकर उसी को सताता है जैसे प्रचण्ड पवन की तरफ धूल फेंकने से धूल फेंकने वाले के ऊपर पड़ती है।

कुछ आदमी आवागमन के चक्कर में रहते हैं, पापी नरक को जाते हैं, धर्मात्मा स्वर्ग को जाते हैं, जो सब सांसारिक इच्छाओं से मुक्त हैं वे निर्वाण पद को प्राप्त करते हैं।

ऐसा स्थान न आकाश में, न समुद्र के बीच में, न पर्वतों की कन्दराओं में; और न इस भूमण्डल पर ही मालूम हुआ है जहाँ मनुष्य बुरे कर्म के फल से बच सके।

ऐसा स्थान न आकाश में, न समुद्र के बीच में, न पर्वतों की कन्दराओं में और न इस भूमण्डल पर ही मालूम हुआ है जहाँ मनुष्य मौत के पंजे से छूट सके।" ❁❁❁

thearyasamaj.org

ब्रह्मचर्य पर प्राचीन मत

ब्रह्मचर्य अमृत के समान है जो व्यक्ति को जीवन देता है ब्रह्मचर्य पर प्राचीन ग्रंथों में प्रमाण मिल सके हैं, उन्हें देते हैं, इन पर ध्यान देने से विशेष कल्याण की सम्भावना है–

"मनुष्य बिना ब्रह्मचर्य धारण किये हुये, कदापि पूर्ण आयु वाले नहीं हो सकते।" (भगवान् ऋग्वेद)

"चारों आश्रमों के यथावत् पूर्ण होने (पालन) के लिये, ब्रह्मचर्याश्रम का पालन करना चाहिये।" (भगवान यजुर्वेद)

"विद्वान् मनुष्यों को योग्य है कि संसार में दो कार्य निरन्तर करें-(1) ब्रह्मचर्य तथा जितेन्द्रियत्व की शिक्षा से शरीर को निरोग, बलिष्ठ और दीर्घजीवी बनावें और (2) सुविद्या और क्रियाकुशलता से आत्मा को तेजस्वी बनावें, जिससे सर्वदा आनन्द प्राप्त हो!"

जैसे प्रसिद्ध अग्नि, बिजली, जठराग्नि और बड़वाग्नि–ये चार और प्राण, इन्द्रिय तथा गौ आदि पशु–सब जगत् की पुष्टि करते हैं, वैसे ही मनुष्यों को ब्रह्मचर्य आदि से अपना तथा दूसरों का बल बढ़ाना चाहिये। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य, औषधिपथ्य तथा सुन्दर नियमों के सेवन से शरीर की रक्षा करें, तो उनके अंग दृढ़ होते हैं।" (भगवान् यजुर्वेद)

"सब पुराणों, प्राचीन संस्कृति और धर्म की रक्षा, ब्रह्मचर्य–व्रत से होती है।" (भगवान अथर्ववेद

"ब्रह्मचर्य सर्वोत्तम तप है। अखण्ड ब्रह्मचर्य–व्रत का व्रती पुरुष देवता है, उसे मनुष्य न समझना चाहिये।" (भगवान शंकर)

"ऋषिवर ! ब्रह्मचारी पुरुष मुझे परम प्रिय जान पड़ता है। ब्रह्मचर्य से ही मेरा निर्भय पद प्राप्त हो सकता है।" (वैकुण्ठनाथ विष्णु)

"दैव, मनुष्य और असुर–सब के लिये ब्रह्मचर्य अमृत–रूप है। जो वर–दान चाहे, वह ब्रह्म–निष्ठा से प्राप्त हो सकता है।" (पितामह ब्रह्मा)

"ब्रह्मचर्य से ब्रह्मतेज का संचय होता है। पूर्ण तपस्वी अपने तप का इसी के बल पर साध सकता है। जो अप्सरा महर्षि विश्वामित्र का तपोभंग कर, मुझे निर्भय करेगी, उसे मेरा सदा सम्मान प्राप्त होगा।" (देवराज इन्द्र)

"हे जीव ! ब्रह्मचर्य रूपी सुधानिधि तेरे पास है। उसकी प्रतिष्ठा से अमर बन ! निराश मत हो! मनुष्यता को सार्थक बनाने का उद्योग कर !"

"ब्रह्मचर्य–व्रत का पालन करते हुये, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन योग्य है। अधिकारी पुरुष ही

thearyasamaj.org

अपनी सम्पत्ति की रक्षा कर सकता है।'' (महर्षि अंगिरा)

''हे निष्पाप ! ब्रह्मचर्य से ही संसार की स्थिति है। मूलाधार के नष्ट होने पर ही पदार्थ का नाश होता है। अन्यथा नहीं!'' (महर्षि वशिष्ठ)

''ब्रह्मचर्य का पालन ब्रह्मपद का मूल है। जो अक्षय-पुण्य को पाना चाहता है, वह निष्ठा से जीवन व्यतीत करे।'' (देवर्षि नारद)

''मुनिवर ! तुम्हारा शाप अंगीकार करता हूँ। विवाह करने से तुम्हारा ब्रह्मचर्य-व्रत खण्डित होता जाता और लोक-कल्याण में बाधा उपस्थित होती। इसलिये माया करनी पड़ी।'' (भगवान विष्णु)

''मोक्ष का दृढ़ सोपान ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्याश्रम के सुधरने से सब क्रियायें सफल होती हैं।'' (महामुनि दक्ष)

''ब्रह्मचर्य से ही ब्रह्मस्वरूप के दर्शन होते हैं। हे प्रभो! निष्कामता ही प्रदान कर दास को कृतार्थ करें।'' (मुनिवर्य भारद्वाज)

''ब्रह्मचर्य से मनुष्य दिव्यता को प्राप्त होता है। शरीर के त्यागने पर सद्गति मिलती है।'' (मुनीन्द्र गर्ग)

''ब्रह्मचर्य के संरक्षण से मनुष्य को सब लोकों मे सुख देने वाली सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।'' (मुनिराज अत्रि)

''जीवात्मा ब्रह्मचर्य से ही परमात्मा में लीन होता है। आप्त धर्म ही चारों फल की प्राप्ति का साधन है।'' (महर्षि व्यास)

''ब्रह्मचर्य-व्रत के पालन से मनुष्य के अशुभ लक्षण भी नष्ट हो जाते हैं।''

''जो उत्तम धर्म का पालन करना चाहे, वह इस संसार में ब्रह्मचर्य का पालन करे।'' (पीयूषपाणि धन्वन्तरि)

''हे राजन् ! ब्रह्मचारी को कहीं भी दुःख नहीं होता। उसे सब कुछ प्राप्य है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से अनेक ऋषि ब्रह्मलोक में स्थित हैं।'' (देवव्रत भीष्म)

''ब्रह्मचारी को सब कुछ सम्भव है। उत्साह से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं। वे ही पुरुष-रत्न हैं, जो अपने व्रत का सदा पालन करते हैं।'' (महावीर हनुमान)

''ब्रह्मचर्य का पालन कर लेने पर, मनुष्य किसी भी आश्रम (गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) में प्रविष्ट हो सकता है।'' (ऋषि जाबालि)

''ब्रह्मचर्य से ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त होती है।'' (ऋषिवर पिप्पलाद)

''ब्रह्मचारी रह कर नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिये। विधि-रहित अध्ययन करने से स्वाध्याय का फल नहीं मिलता।'' (महामान्य हारीत)

''हे जनक जी ! जिसने ''ब्रह्मचर्य में चित्त की शुद्धि की है, उसी को अन्य आश्रमों (''ब्रह्मचर्य,

thearyasamaj.org

गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) में आनन्द मिलता है।'' (बाल-ब्रह्मचारी शुकदेव)

''बिना ब्रह्मचर्य के (विषय-भोग) से आयुष्य, तेज, बल, वीर्य, बुद्धि, लक्ष्मी, महत्वाकांक्षा, पुण्यतप और स्वाभिमान का नाश हो जाता है।'' (स्मृतिकार गौतम मुनि)

''इच्छा से वीर्य का नाश करने वाला ब्रह्मचारी निश्चयपूर्वक अपने व्रत (''ब्रह्मचर्य) का नाश कर देता है।'' (महामति मनु)

''ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप है।'' (योगिराज कृष्ण)

''ब्रह्मचर्य के पालन से आत्मबल प्राप्त होता है।'' (योगाचार्य पतंजलि)

''ब्रह्मचर्य के बल से ही मनुष्य ऋषि-लोक को जाता है।'' (कपिलमुनि)

''ब्रह्मचर्य-व्रत धारण करने वालों को मोक्ष (स्वर्गीय सुख) मिलता है।'' (सनत्सुजातमुनि)

''वीर्य ही सारे शरीर का सार है।''

''मनुष्य का बल वीर्य के अधीन है।''

''ओज ही शरीर की धातुओं का तेज है।'' (वैद्यक)

''अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन कर लेने पर, सुलक्षणा स्त्री से विवाह करना चाहिये।'' (मिताक्षरा)

''जो मनुष्य ब्रह्मचारी नहीं उसको कभी सिद्धि नहीं होती। वह जन्म-मरणादि क्लेशों को बार-बार भोगता रहता है।'' (अमृतसिद्ध)

''ब्रह्मचर्य से पाप इस प्रकार कटता है, जिस प्रकार सूर्योदय से अन्धकार का नाश होता है।'' (धर्म-संग्रह) ❁❁❁

आवश्यक सूचना

मई+जून 2013 व 2014 दो वर्षों का वार्षिक विशेषांक **महाभारत के प्रेरक प्रसंग** 15/- पन्द्रह रूपये डाकव्यय की वी.पी.पी. से भेजना शुरू हो गया है। **'तपोभूमि'** के जिन सदस्यों (पाठकों) ने वर्ष दिसम्बर 2014 तक का वार्षिक शुल्क अभी तक जमा नहीं किया है वे शीघ्रातिशीघ्र **सत्य प्रकाशन** कार्यालय को जमा करायें अन्यथा अगले माह की पत्रिका व विशेषांक दोनों से वंचित रहना पड़ेगा।

उन पन्द्रह वर्षीय सदस्यों से भी निवेदन है कि वे भी अपना पुनः सदस्यता शुल्क शीघ्र ही जमा करायें ताकि पत्रिका व विशेषांक सहर्ष प्राप्त कर सकें।

आशा और विश्वास है कि आप शीघ्रातिशीघ्र शुल्क जमा करने का कष्ट करेंगे।

-व्यवस्थापक

सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

thearyasamaj.org

भारतवर्ष के साधु

लेखकः सदानन्द स्वामी

पुत्री ने प्रश्न किया, पिताजी आपने बतलाया है, कि देवियों को अपने पतिदेव ही से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, परन्तु इस देश में तो भगवा वेश साधुओं के उपदेश प्रमाणिक समझ कर बड़ी श्रद्धा से नर और नारी से सुने जाते हैं, क्या उनके उपदेश न श्रवण करने चाहिएं?

पिता ने उत्तर में कहा। अज्ञानता सब पापों का मूल है, अज्ञानियों का चरित्र और चिन्तन, पूजा पाठ, और दानपुण्य सभी पतित करने वाला है, अज्ञानियों में श्रद्धा तो होती है परन्तु ज्ञान के बिना अन्धश्रद्धा भी हानिकारक है। यह अन्धश्रद्धा का ही फल है, जिससे लाखों साधुओं का पालन पोषण हो रहा है, और उनमें से सहस्रों साधु धर्म के पवित्र चोले की आड़ में अत्याचारियों का घृणित जीवन व्यतीत कर रहे हैं, देवियां तो यह समझती हैं, कि गेरवे वस्त्रों में देवताओं का वास है। देव शब्द के अर्थ विद्वान् और सदाचारी के हैं, परन्तु वर्तमान समय के साधुओं में इन दोनों गुणों का अभाव है। वह साधु, साधु कहलाने के योग्य नही हैं, जो पराया अन्न खाकर अन्नदाता का सदुपदेश द्वारा उपकार नहीं करता। परन्तु उपकार क्योंकर हो, जब कि जीवन का उद्देश्य ही इन्द्रिय तुष्टी है। काशी आदि तीर्थ स्थानों में ऐसे साधु अनेक हैं, जिनका मुख्य धर्म हलवा, पूरी आदि खाकर व्यभिचार करना है, और ऐसे अत्याचारी साधुओं को दान देकर पाप को ही बढ़ाना है। सत्य पूछो तो आज कल तीर्थों में धरा ही क्या है, वहां तो पाखण्डी और धूर्त लोग लूट रहे हैं। तीर्थ तो मुस्टण्डे साधुओं के आश्रम बन रहे हैं, जहां जाने से लाभ की अपेक्षा हानि होती है। यही कारण है, कि सती नारियों के लिए तीर्थ यात्रा करना बहुत हानिकारक है। ऐसे स्थानों पर देवियों के लिए स्थल-2 पर कांटे बिछे हैं, रक्षक-भक्षक हो जाते हैं, गले में माला, मस्तिष्क पर तिलक, बदन पर राख, पंच अग्नि तापना, और आंखें बन्द करके मन माने मंत्रों का बिना सोचे समझे जाप करना, केवल जगत को धोखा देकर ठगने का साधन है, क्योंकि बिना आडम्बर रचे इच्छा सिद्धि नहीं होती। मन्दभाग्य से इस देश में वाम मार्ग का भी गुप्त प्रचार है, उनके अनेक मन्दिर ऐसे हैं जहां ऐसे दुष्टों का निवास है, सच पूछो तो साधुओं के स्थान धर्म के स्थान नही रहे।

किसी ने सत्य कहा है-**"सन्तों के डेरे दूर मन्दिरां बिच रैंहदे चोर"**। भोली-भाली देवियों को साधु और असाधुओं की पहचान ही नहीं, वह उनके वेश पर ही भूल कर अपना धर्म खो बैठती हैं। अनेक देवियां इन पाप के केन्द्रों की यात्रा करने से अपना सर्वस्व नष्ट कर चुकीं, और मन्दिरों में ही छिपाई गईं, और मरते दम तक उनका पता लगा। हम यह नहीं कहते, कि प्रत्येक साधु अत्याचारी हैं, नहीं-2 ऐसे भी अनेक साधु हैं, जिनका धर्म नर और नारियों की तृषित आत्मा में धर्म रूप अमृत का स्रोत बहाकर उनके

thearyasamaj.org

आत्माओं को तृप्त करना है, परन्तु ऐसे साधुओं की संख्या बहुत ही न्यून किन्तु न होने के बराबर है। अत्याचारी साधुओं ने अपने मिथ्याचरण द्वारा न केवल धर्मात्मा साधुओं को किन्तु हिन्दु जाति को भी कलंकित कर रखा है। यही कारण है, कि अनेक श्रद्धालु लोग इन धर्म स्थानों को घृणित दृष्टि से देखते हैं। पवित्र साधुओं की पहचान बहुत परिश्रम के पश्चात् होती है, इसलिये देवियों का धर्म है, कि साधुओं के भगवे वेश पर ही श्रद्धा न रक्खें, और न ही धर्म शिक्षा के निमित्त उनको अपना गुरु बनाएं। मन्दिरों और तीर्थ स्थानों में भी देवियों की रक्षा नहीं हो सकती, दयानन्द और रामतीर्थ जैसे तपस्वी इन्द्रियजीत योगी, संन्यासी, जिनका धर्म नर और नारी को अमृतरस पिला कर उपदेश देना था, लोप हो गए, बुद्धदेव के भक्त उपगुप्त जैसे कर्म योगी जो दुःखियों के दुःख निवारण करने और रोगियों की सेवा करने को ही परम धर्म मान रहे हों, आज ढूंढ़ने पर भी दिखाई नहीं देते, ऐसे साधु जो अनेक प्रकार के पतित करने वाले प्रलोभनों की मार से परीक्षा द्वारा उत्तीर्ण हो चुके हों, ईश्वर-पूजा और वेदों की शिक्षा न होने से दिखाई नहीं देते। इसलिए तो हम कहते हैं, कि देवियों को भूलकर भी साधुसंगत नहीं करनी चाहिए। देवियां स्वयं विद्योपार्जन करें, धर्म ग्रन्थों का पाठ करें, सन्ध्योपासना करें, अपने घर के विद्वान् पुरुषों अथवा धर्मात्मा स्त्रियों की संगत से लाभ उठावें, और धार्मिक सभाओं में जाकर उपदेश ग्रहण करें, और अनेक भोली-भाली देवियों को भी अपने सत्योपदेश द्वारा पवित्र बनाएं। स्वामी दयानन्द सरस्वती देवियों को अपने पास नहीं आने देते थे। प्रायः पंजाब की स्त्रियां साधुओं की प्रसिद्धि सुनकर उनके पास जाना शुरु कर देती हैं, चुनांचि लाहौर नगर में जब कि स्वामी जी उपदेश दे रहे थे, बहुत सी स्त्रियां एकत्रित हो गईं, उनके लिए अलग एक फर्श कर दिया गया, और अपने व्याख्यान में उन्होंने बड़े जोर के साथ देवियों पर इस बात को प्रगट किया, कि "इनका पुरुषों के समूह में आना बहुत बुरा है, और साथ ही कहा, कि स्त्रियां बहुधा सन्तान या धनादि की प्राप्ति की कामना से साधुओं के पास जाती हैं, वह साधु जो स्त्रियों को सन्तान और धन देने की डींग मारते हैं, बड़े अत्याचारी और ठग हैं। देवियों को चाहिए, कि अपनी सभा करें, अथवा अपने पतियों से उपदेश सुनें, परन्तु सन्तान और धन की इच्छा से साधुओं के पास भूलकर भी न जाएं, और कि वह पुरुष बड़े अयोग्य हैं, जो अपनी स्त्रियों को हर जगह जाने की आज्ञा देते हैं, और उन पर अपना कुछ अधिकार नहीं रखते।" महात्मा गांधी लिखते हैं, "कि वह साधु जो देवियों को अपनी पूजा करने या कराने का उपदेश देता है, और अपना झूठा अन्न भी खिलाता है, वह मिथ्याचारी और स्वयं भ्रष्ट है, परन्तु देवियां क्यों पराए पुरुषों की पूजा करके धर्म भ्रष्ट हों, यदि देवियों को मनुष्य की पूजा ही करनी है, तो वह किसी आदर्श स्त्री की पूजा करें, अथवा ऐसे तपस्वी साधुओं से भी उपदेश लें, जो आश्रम धर्म, पालन करने के पश्चात् संन्यासी हुए हों, और ऐसे ही त्यागियों को धर्म प्रचार करने का अधिकार है, और वह ही देव दृष्टि वाले होते हैं, परन्तु एकान्त में तो कोई भी देवी उनके पास भी न जावे। मनुष्य का मन बड़ा चंचल है, इस मन में पाप तथा पुण्य की तरंगें क्षण-2 में उठती रहती हैं, इसलिए किसी जीते मनुष्य को अच्छा नहीं कहा जा सकता। आज यदि वह अच्छा है, तो कल बुरा है, फिर बहिरूपी और अत्याचारी

thearyasamaj.org

को तो हम पहचान भी नहीं सकते, इसलिए पूजा तो केवल परमात्मा की ही करनी चाहिए। मनुष्य की पूजा यदि करनी है, तो या तो अपने पतिदेव की करो, अथवा किसी मनुष्य की उसकी मृत्यु के पश्चात् क्योंकि मृत्यु के पश्चात् तो हम उसके गुणों की पूजा करते हैं, न कि उसके स्वरूप की।''

बहिरूपिए (बाह्यवेश) साधुओं के उपदेश का नमूना

हमारे देश के पतन का मुख्य कारण देवियों की अज्ञानता है, देवियों में स्वभाविक धर्म के लिए श्रद्धा तो पाई जाती है, परन्तु उनको धर्म ज्ञान नहीं मिलता, सदाचारी विद्वानों के विचार उनके दृष्टिगोचर नहीं होते, पुस्तकालयों के उत्तम-2 ग्रन्थ पढ़ने का उनको न ही अवसर मिलता है, और न ही पुरुष ऐसे ग्रन्थों से स्वयं लाभ उठाकर अपनी देवियों के मस्तिष्क (दिमागी) शक्ति का विकास करते हैं। क्षत्रिय रमणियों के दृश्य और ऐतहासिक ग्रन्थों द्वारा उनके कोमल हृदयों को अंकित नहीं किया जाता, इसलिए उन पुरुषों की शरण लेती हैं, जिन्होंने ज्ञानी तथा धार्मिक न होते हुए धर्म के पवित्र चोले अपने शरीर पर धारण कर रखे हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य अज्ञानता और भ्रम जाल फैलाकर अपना पेट पालन करना है। पुरुष तो अब उनकी कुटिल चालों से परिचित हो गए हैं, परन्तु देवियां घर की चार दीवारी में बन्द रहने के कारण उनकी कपट और पाप से पूर्ण लीलाओं का ज्ञान न रखती हुई उनको महात्मा समझकर अपना तन, मन और धन भी उनके अर्पण कर रही हैं। पंजाबी भाषा में यह कहावत है कि **''पुरुषों का गुरू भूखा मरे, देवियों का गुरू चैन उड़ाए''**। इसलिए पाखंडी साधु देवियों में ही उपदेश देकर प्रसन्न होते हैं, और उनको उल्टी शिक्षा देकर अपना उल्लू सीधा करते हैं, साधुओं के मठ उनके अखाड़े और डेरे अज्ञानी भोली-भाली देवियों के दान से निर्विघ्न चल रहे हैं, परन्तु वह मुफत का अन्न खाकर देवियों का कल्याण नहीं करते, किन्तु उलटी शिक्षा देकर उनको धोबी के कुत्ते की भांति न घर का और न घाट का रहने देते हैं। उदाहरणार्थ पिछले कुम्भ गंगा के मेले पर जिस प्रकार का उपदेश देवियों को दिया गया, वह नर और नारी के विचारने के योग्य हैं, क्या ऐसे उपदेशों से देश और जातियों का कल्याण हो सकता है, इसका कुछ नमूना देख लीजिये, जो समाचार पत्र छपा था। ''साधुओं के एक अखाड़े में कथा हो रही थी, सात आठ सौ देवियां और हजार बारह सौ पुरुष बैठे थे, सन्त जी महाराज सन्त की महिमा वर्णन करते हुए कह रहे थे ''एक नारी के संतान नहीं होती थी, उसने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु कुछ न बना, सब ओर से निराश होकर एक सन्त के पास पहुंची, जिसने राख की एक चुटकी उसे देदी, नारी को उस चुटकी पर विश्वास न हुआ, इसलिये उसने राख की चुटकी अपने मकान के सामने गिरा कर ऊपर गोबर फेंक दिया। छै सात मास वहां गोबर इकट्ठा होता रहा, नववें महीने खेत में खाद डालने के लिए जब गोबर उठाया गया, तो नीचे से एक खूबसूरत खेलता हुआ बच्चा निकल आया, यह है सन्तों की चुटकी की महिमा''। यह कथा सुनकर जहां ज्ञानी पुरुष साधुओं की अयोग्यता की चर्चा कर रहे थे, वहां

thearyasamaj.org

देवियां बलिहारे-2 के शब्द उच्चारण कर रही थीं।

दूसरे अखाड़े में सन्त जी यह कथा सुना रहे थे, "एक भक्तिनी ने गुरू के लिए सब कुछ अर्पण कर दिया, गुरू ने कहा आज तेरे घर में कुछ नहीं था, भक्तिनी विचारने लग गई, गुरू घर आवेंगे तो क्या खिलाऊंगी, कोई उधार भी नहीं देता, सारी रात भक्तिनी की बेचैनी में कट गई, प्रातः हुई सूर्य चढ़ गया, खाने का समय निकट आ गया भक्तिनी को कुछ सूझता नहीं था, और जोर-2 से रो रही थी, रोते-रोते जो उसकी आंखों से आंसू गिरे, तो क्या देखती है कि उनसे दूध के मटके भर गये, बस तत्काल उठी, और दूध ही से सब खाने के पदार्थ तैयार कर दिये। घर के अन्दर देखा तो वहां सब प्रकार का भोजन तैयार था, गुरूजी आए, और हंस-2 उन्होंने खाना खा लिया। आ हा हां, गुरुभक्ति की कैसी महिमा है"। देवियों ने सतवचन महाराज-2 यह शब्द एक स्वर से कहते हुए प्रसन्नता प्रगट की। इस अवस्था को देखकर शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, ज्ञानकाण्ड के बिगड़ने से भारत की यह दुर्दशा हो गई है, साधुसंन्यासी पेट के गुलाम बनकर धर्म भ्रष्ट हो गए हैं। ❁❁❁

पृष्ठ सं. 27 का शेष-

विचार गलत है। बारीक अक्षरों को नित्य पढ़ने से दृष्टि ठीक बनी रहती है और नेत्र की पीड़ा भी जाती रहती है।

(8) अच्छी आंखों में यह विशेषता देखी जाती है कि पढ़ने वाले को पुस्तक के वे अक्षर जिन्हें वह पढ़ता है, औरों की अपेक्षा अधिक काले प्रतीत होते हैं। इसका यह अर्थ है कि उनकी आंखों में त्राटक का तेज मौजूद है। जिन लोगों को किताब के अक्षर अधिक काले नहीं मालूम होते, उनके बारे में यह समझना चाहिए कि उनमें त्राटक के तेज की कमी है। इस कमी के कारण ही नेत्र पढ़ते समय थक जाते हैं। इस तेज को उन्हें बढ़ाना चाहिये।

इन अभ्यासों के करने से अनेक रोगियों की दृष्टि बढ़ गई है और चश्मा लगाने से उनका पिंड छूट गया है। एक साठ साल के बुड्ढे की दृष्टि तीन दिन के अभ्यास में बारीक अक्षर पढ़ने के योग्य हो गई थी। इन्हीं उपायों के द्वारा बहुतों ने अपनी दृष्टि स्वस्थ और उत्तम बनाई है। इन विधियों के अभ्यास से कौड़ी खर्च किये बिना ही हर कोई लाभ उठा सकता है। ❁❁❁

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका मंगाने हेतु

एक वर्ष के लिए 150/- एक सौ पचास रुपये वार्षिक शुल्क,

पन्द्रह वर्ष के लिए 1500/- एक हजार पाँच सौ रुपये

आज ही भेजिये।

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य सुधा–

दृष्टि–दोष दूर करने की सरल विधि

लेखकः डॉ० आर० एस० अग्रवाल

अक्सर लोग पढ़ते समय नेत्रों में पानी आने, खुजली और जलन होने, आंख और सिर में दर्द होने आदि बातों की शिकायत किया करते हैं। अनेकों के लिये यह असम्भव हो जाता है कि वे बुढ़ापे में बारीक अक्षर पढ़ सकें और किताब को नजदीक रखकर देख सकें। पढ़ने में किसी प्रकार की भी दिक्कत या तकलीफ होने से डाक्टर लोग तुरन्त चश्मा लगाने की सलाह दे देते हैं। पर चश्मा लगाने से दृष्टि कमजोर होती जाती है, जिसकी वजह से लोगों को बार–बार चश्मा बदलना पड़ता है।

यदि आप पढ़ने के निम्न नियम जान लें और उनको प्रयोग में लावें तो लिखने–पढ़ने की हर प्रकार की कठिनाई दूर हो जाय और चश्मे की आवश्यकता ही न रहेगी।

(1) पढ़ते समय आपकी किताब नीचे की ओर रहनी चाहिये, नेत्रों के बिलकुल सामने नहीं।

(2) आप कुर्सी या जमीन पर आराम से बैठकर। पढ़ते समय अपने हाथों को सिर या ठोड़ी परन रखें। सिर को किसी एक ही विशिष्ट अवस्था में न रखकर जरा–जरा हिलाते रहें। यदि आप लेटकर पढ़ने के अभ्यासी हों तो पढ़ने के समय सिर के नीचे कोई तकिया लगाकर पढ़ना चाहिये, करवट लेकर नहीं।

(3) पढ़ते समय ऊपर की पलकें कुछ–कुछ नेत्रों पर गिरी रहनी चाहियें, आँखों को अधिक नहीं खोलना चाहिए। पढ़ते समय पलकों को धीमे–धीमे गिराते रहना नेत्रों के लिए लाभदायक है।

(4) जाड़े की ऋतु में अक्सर लोग धूप में बैठकर भी पढ़ते हैं। परन्तु जो लोग धूप में पढ़ना चाहें, उन्हें अपनी किताब ऐसे स्थान पर रखनी चाहिये जिससे किताब पर धूप न पड़े। यदि चेहरे पर धूप पड़ती हो तो परवाह नहीं। परन्तु यदि धूप किताब पर पड़ेगी तो आपकी आँखों पर जोर पड़ेगा। इसलिये इससे आपको बचना चाहिये।

(5) पढ़ने के लिये रोशनी बहुत तेज नहीं होनी चाहिए। बिजली की तेज रोशनी में पढ़ना आंखों के लिए हानिकर है। मोमबत्ती, टेबुल लैम्प या दूधिया बल्व पढ़ने के लिए लाभकारी हैं। अगर सादे बल्व से पढ़ना पड़े तो इस प्रकार से पढ़ना चाहिये कि बल्व की किरणें कागज पर सीधी न पड़े।

(6) रोज सुबह को दस मिनट तक सूर्य की ओर नेत्र बन्द करके बैठना चाहिये। अपने सिर को सांप के फन की तरह धीरे–धीरे हिलाना चाहिये। फिर छाया में आकर ठण्डे पानी से नेत्रों को धोना चाहिए। इस प्रकार नित्य सूर्य व्यायाम करने से नेत्र स्वस्थ बने रहते हैं, दृष्टि तेज होने लगती है।

(7) आमतौर पर लोग यह समझते हैं कि बारीक अक्षर पढ़ने से नेत्र कमजोर हो जाते हैं। यह

शेष पृष्ठ सं. 26 पर

thearyasamaj.org

कर्म

लेखकः लक्ष्मीनारायण दीनदयाल अवस्थी

हाथ धरकर गाल पर, चुप साध कर जो बैठते।
आज कल के फेर में पड़कर न कुछ हैं देखते॥
आदर निरादर का न जिनको तनिक सा भी ध्यान है।
है उन्हें निःसार जग मिलता सदा अपमान है॥
सनसनी जिनके हृदय में है, नहीं उत्साह की।
कार्य करने की जिन्होंने है नहीं परवाह की॥
कौन थे क्या बन गये हैं यह न जिनको ध्यान है।
उनके लिये जग दुःखमय जीवन मरण समान है॥

संसार असार है यह अवश्य आलसीजन इस कर्मक्षेत्र जग की परिभाषा करें, तथा ज्ञान-शून्य मनुष्य चाहे भले अपने हाथ की गांजे की चिलम में से धुवां उड़ाते हुये इस जग को निःसार कहें; मूर्ख जन चाहे भले भाग्य के भरोसे गाल पर हाथ रक्खें, चुपचाप अपनी आलस्यमयी किसी तुन की बुन में भिड़े, अपनी कंचन मयी देह में घुन लगालें परन्तु जो कर्मण्य पुरुष हैं वे कदापि इस जगत को निःसार नहीं मानते।

वे कर्म कर जग के सामने कर्म का सार्थक मर्म खोल देते हैं। भूखा वही मरता है जो कर्म विमुख रहता है। दुःख उसी की भाग्य में लिखा हुआ है अर्थात् उसी के गले का हार है जो कर्म का तिरस्कार कर आलस्य का प्यार करता है। आपत्तियों से ग्रसित वही पुरुष है जो कर्म विहीन है तथा कभी-2 बीमार भी कर्मविहीन पुरुष ही सबसे अधिक रहता है। बीमारियां भी कदाचित ऐसे ही पुरुष की सबसे अधिक आयु पाई गई है तथा वे ही पुरुष शक्तिशाली अधिक पाये जाते हैं जो कार्य कर अपने अस्तित्व की ओर ध्यान दिया करते हैं और वे गल कर जांजर हो मुर्दा हो जाते हैं जो जीवित होते हुये भी मुर्दे के समान हैं, कि जिनके हृदय में कार्य करने का नाम निशान भी नहीं है।

चलते हुये लोहे पर जंग नहीं चढ़ता परन्तु जो लोहा पड़ा रहता है अर्थात् अकर्मण्य रहता है, वह थोड़े ही दिनों जंग के वशीभूत हो अपना सर्वस्व खो बैठता है और शनैः-2 उसका नाम व निशान भी नहीं रहता। प्रत्येक मशीनें रात, दिन चलने से साफ रहती हैं यदि मशीनों को वास्तविक आराम के अतिरिक्त अधिक आराम दिया कि वे बर्वाद हो जाती हैं, इसी प्रकार यह मनुष्य देह भी मशीन है यदि इससे सदा

thearyasamaj.org

वास्तविक आराम के अतिरिक्त कार्य लिया जाय तो यह दिन दूनी और रात चौगुनी योग्य तथा समर्थ बनती जायगी। कर्म ही इस देह का सार है कर्म से ही पुरुष अपनी देह को सबसे अधिक दिनों तक रखता है तथा उसका उपयोग ले सकता है।

हम देखते हैं कि जिस समय हमारे यहां के पूर्वज तथा अन्य कर्मनिष्ठ पुरुष जब स्वयं कार्य करते थे समृद्धिशाली तथा शौर्यवान् होते थे। जो कुछ वे कहते थे उसे वे सिद्ध कर दिखा देते थे, उनकी बात केवल कर्म के बल पर मिथ्या कदापि नहीं होती थी वे कर्म के बल से पृथ्वी हिला देते थे, बैरियों का हृदय कँपा देते थे वे जहां जाते थे वहीं उनकी धांक से लोगों के हृदय पर धक्का पहुंचता था तथा उनका सर्वत्र मान था। परन्तु जब से उन पूर्ण गुणों की गरिमा का उनकी सन्तानों ने तिरस्कार किया तब से उनका पतन होता चला गया यहां तक कि आज घुटनों के बल पर भी खड़ा रहना असम्भव प्रतीत होने लगा। हम जब से कर्म करना भूल गये हैं तभी से ऐसी दशा हो गई है। आरामतलवी सदा क्षय पैदा करती है, "बीर महाराणा केसरी प्रताप" जो अभी हाल ही के समय में हुये हैं। हम जब अपनी आंख उने जीवनचरित्र पर पात करते हैं तो पाते हैं कि उस वीर ने अपनी सारी आयु कार्य करने में व्यतीत की और अपनी अखण्ड शक्ति को केवल कार्य सिद्धि पर बिताया। वह कर्म वीर था, इसलिये उससे म्लेच्छों ने हार मानी। उसका जग में यश चहुं ओर मड़रा रहा है। महमूद गोरी जिसने हिन्दुस्तान पर कई बार आक्रमण कर जय पाई। यदि वह अपने घर ही में हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता तो उसको हिन्दुस्तान में जय प्राप्त करने का सौभाग्य कदापि न मिलता। इसी प्रकार ईसा के जीवन पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि धार्मिक वीर ईसा ने केवल अपने निरन्तर कार्य पर ही निर्भर हो सारे संसार में अपने धर्म का झण्डा उड़ाया और उसका धर्म आज सर्वव्यापी हो रहा है और उसके धर्म की जय आज संसार के व्योम में व्याप्त हो रही है यह केवल उसके निरन्तर प्रयत्न एवम् साहस का परिणाम है।

सुख की प्राप्ति इसी कार्य पर ही निर्भर है। वीर वही कहलाता है जो डटकर कार्य करता है, तथा जिसका हृदय निरन्तर कार्य करने में साहस के साथ जुटा रहता है। साहस भी इसी कार्य का एक अंग है और प्रत्येक पुरुष को उसके सम्पादन करने की बड़ी भारी आवश्यकता है प्रत्येक वीर पुरुष का तथा कर्मण्य पुरुष का धर्म है कि वह साहसी बने। साहस से काम करना प्रत्येक वीर पुरुष का धर्म है, उकता कर काम छोड़ देना वीरता नहीं है योद्धा वही कहलाता है, जो साहस के साथ वीरताई दिखाता है। पहलवान भी उसी कर्मण्य पुरुष को कहते हैं जो कार्य कर अपनी देह को ठीक बनाता है और जो कर्मच्युत रहता है वही मुर्दा है।

हम व्याकरण से सिद्ध किये हुये नपुन्सक लिंग को भी पुलिंग ही कहेंगे यदि वह नपुंसक कार्यदक्ष रहता हो परन्तु वह पुलिंग भी नपुन्सक लिंग ही है यदि वह कार्य परायण नहीं रहता है। मर्द यदि मर्दानगी करे तो "मर्द" अन्यथा कुछ नहीं। हम स्त्री को भी मर्द मानेगे यदि वे मर्दों की तरह कार्य में परिणित रहती हों, यदि वे मर्द को अपने अनोखे कार्य के सामने तुच्छ सिद्ध कर देती हों तो वही देवियां अर्थात् मर्द

thearyasamaj.org

कहाती हैं हमारे हिन्दोस्तान में ही बहुत से ऐसे उदाहरण मिलेंगे कि जिनसे यह प्रमाणित होगा कि स्त्रियों के सम्मुख पुरुष कोई वस्तु नहीं है उनका विकट साहस सदा सर्वदा सराहनीय है। जिनके अलौकिक शौर्य तथा विकट साहस के सामने शत्रुओं के कटक अपना साहस छोड़ भागें उन्हीं की जय की भेरी संसार में गूंजी जिनने अपने अलौकिक शौर्य के साथ कार्य किया। कार्य का सम्बंध किसी लिंग, वचन आदि से नहीं है वह उसी का दास है जो उसका दास बनता है।

मर्द यदि कार्य करे तो मर्द अन्यथा मुर्दा है। मर्द और मुर्दा शब्द के लिखने में बहुत थोड़ा अन्तर है परन्तु इन दोनों शब्द का सिद्ध कर देना बहुत कठिन एवम् बहुत सरल है। मुर्दा सिद्ध कर दिखाना उतना ही सरल है कि जितना मर्द प्रमाणित करना दुस्तर है।

हमारा और भी कहना है कि यदि मनुष्य का प्रेत भी कार्य करे तो वह जीवित है और वही सब कुछ है परन्तु जीवित पुरुष भी मृतवान् है यदि वह अपने कर्म को नहीं जानता। हमने आज तक जितने मनुष्यों को उन्नति शील देखा है वे सारे कर्म ही के आधार से बने हैं हम आदि से अन्त तक कर्म ही की जय पाते हैं। कहां तक कहें यदि हवा भी अपने रात दिन चलने के कर्म को छोड़ दे तो वह विषमयी हो जाती है, यदि वह एक दिन भी रुक जाय तो दुनिया लयता को प्राप्त हो जाय इसी प्रकार बहती हुई नदी को भी मानिये कि यदि वह भी अपनी चाल को रोक ले तो शीघ्र समाप्ति को प्राप्ति हो।

हम जब देखते हैं कि प्रकृति की जीव रहित वस्तुयें भी अपना काम आप से ही आप निरन्तर करती हैं तब हम लोग तो जीवन युक्त मनुष्य कहलाते हैं हम में तो उन प्रकृति के अपेक्षा कुछ ज्ञान भी विशेष है तब हमारा धर्म है कि हम उन की अपेक्षा कुछ कार्य विशेष करें। देखिये हम जिस समय अपनी दृष्टि से महाभारत पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि यदि श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन से कर्म न कराते तो उनकी ख्याति तथा अर्जुन की जय न होती और न वे लोग दुनिया में अपना अस्तित्व ही सिद्ध कर पाते। श्रीकृष्ण का नाम इसीलिये आज कल ईश्वर की गणना में माना जाता है कि उन्होंने अपना अलौकिक शौर्य दिखला अर्जुन को उपदेश दिया तथा उसी प्रकार कार्य किया और अर्जुन भी वीर इसीलिये कहलाता है कि उसने अपने निःसीम पराक्रम द्वारा अपना शौर्य दिखला कर्म द्वारा विजय प्राप्त की, देखो वही पुरुष संसार में विजय पाता है जो कर्म करता है।

और यदि वीरवर बालक अभिमन्यु अपना अलौकिक शौर्य व्यूह में न दिखाता तो आज हमको उसके नाम लेने की जरूरत न पड़ती। यह केवल उसका निःसीम शौर्य उसकी याद दिलाता है, नहीं तो अभिमन्यु ऐसे लड़के इस संसार में कई नित्य मरते जाते हैं उनके नाम पर कोई आंसू भी नहीं बहाता। आंसू उसी पुरुष के लिये बहाये जाते हैं जो कर्म परायण हो। हम को बरवश उसी पुरुष को याद करना होता है जो कार्य कर अस्तित्व सदा के लिये छोड़ जाता है।

कीर्ति कोई विलग् पदार्थ नहीं है वह इसी कर्म से निकली है और वह कर्म की ही दासी है तथा कर्म की ही वह निशानी है। पूजा जगत में आजकल भी उन्हीं वीरों की होती है जो अपना अस्तित्व सदा

thearyasamaj.org

के लिये अमर कर गये हैं, दुनियां में कई मनुष्य मर चुके हैं परन्तु पूजा किसी की नहीं होती हां वे वीर आजकल भी पूजे जाते हैं कि जिनके कर्म पूजनीय हैं। मनुष्य कभी माननीय ही हो सकता जब तक कि उसका कर्म माननीय न हो मनुष्य और जानवरों में कोई भेद नहीं केवल कर्म ही का भेद है।

कई एक जानवर भी ऐसे हो चुके हैं कि जिनके कर्म देखकर मौन हो जाना पड़ता है, हमको उन्हें भी पूजनीय कहना पड़ता है। जिस प्रकार महाराणा केशरी प्रताप का चेतक (घोड़ा) जिसने मरते तक इस बहादुरी के साथ, साथ दिया कि जिसकी प्रशंसा लिखना अत्यन्त कठिन है यह केवल उसके कर्म का परिणाम है, जो आज उसकी याद दिलाता है। जिस प्रकार उसने साथ दिया तथा उसने कार्य किया यदि इसी प्रकार कोई पुरुष भी कार्य करता तो उसकी भी कीर्ति सारे व्योम में फैलने लगती। संसार में कभी कोई किसी का नहीं हो सकता केवल पुरुष का कर्म ही उसको उपयुक्त अपने आप उपाधियां प्रदान कर देता है, बिना कर्म के संसार में चहुं ओर अन्धकार है इसलिये प्रत्येक पुरुष का धर्म है कि वह कर्म परायण हो।

हम देखते हैं कि कई कायर पुरुष कार्य करने से कचुआकर कायरतावश कार्य छोड़ बैठते हैं ऐसा उत्साही पुरुषों को करना उन का धर्म नहीं है। हाथ पर हाथ धरकर चुपचाप बैठे रहना पाप है, जो पुरुष बैठा रहता है वह महापातक का भागी है क्योंकि उसके पास जो कार्य करने के साधन हैं उन का प्रयोग नहीं होता है और जगत की क्षति होती है। पापी वही कहलाता है जो दुनियां की क्षति करता है और जो सांसारिक नियमों को भग्न करता है। दुनिया के नियमों को भग्न करनेवाला ही पुरुष पापी कहा जाता है। उसी प्रकार अकर्मण्य पुरुष भी कर्म रहित रहकर जग की क्षति करता है, उसको जो लाभ दुनिया को पहुंचाना था, जो समाज की सेवा करनी थी, वह न कर दुनिया वृथा अन्न इत्यादि खाकर उसकी अवनति करता है। यदि वही अनाज कोई कर्मण्य पुरुष उपभोग में लाता तो समाज का कितना उपकार होता, साथ ही साथ वह अकर्मण्य पुरुष स्वयं कुछ सम्पादन तो करही नहीं सकता, परन्तु उसके लिये दूसरों को आपत्ति सहकर उसके हेतु उपार्जन कर उसका भरण पोषण करना होता है। ऐसी स्थिति में वह पुरुष जो अकर्मण्य रहता है केवल अपनी ही क्षति नहीं कर लेता परन्तु अपने साथ एक और कर्मण्य पुरुष को अपना अनुयायी बना लेता है कि जो उसका भरण पोषण का भार अपने ऊपर लेता है। वह केवल अपने आप को ही क्षति ग्रसित नहीं बना लेता परन्तु और दूसरों को भी हानि पहुंचाता है उसके ऊपर केवल उसी का पाप नहीं रहता परन्तु साथ ही साथ दूसरे का भी पाप उसी के शिर मढ़ा जाता है।

याद रखिये कि दूसरों के भरोसे जीना मरने से भी खराब है अपनी जान रहते हुये दूसरों के मुंह की ओर अपने कार्य के प्रति देखना महान कायरता है। दूसरे के सामने भीख मांगने की अपेक्षा मर जाना सबसे उत्तम है क्योंकि मनुष्य को मृत्यु से केवल एक ही बार प्राण परित्याग करना पड़ते हैं परन्तु भीख मांगनेवाले को दिन रात मांग-मांग कर लज्जा के मारे कई बार मरना पड़ता है। उसको दूसरों के बोल सहना पड़ते हैं जो कदाचित मरने की अपेक्षा कई गुणा अधिक विषम एवम् हृदय विदारक होते हैं। हम देखते हैं कि शब्दों के आघात से पशु तक भयभीत हो जाते हैं और मनुष्य की आज्ञा के अनुयायी हो जाते हैं परन्तु हमें अकर्मणीय पुरुषों के प्रति अवश्य खेद है जो बातों की आघात से भी नहीं पसीजते क्या ऐसी अवस्था में वे मनुष्य कहाने के अधिकारी बन सकते हैं कि जिनके कार्य पशु से भी घृणित होते हैं। ❁

thearyasamaj.org

ईश्वर ने दुनियां क्यों बनाई?

लेखकः पं० रामचन्द्र देहलवी

तो क्या मेरी मौजूदगी में बच्चा जाहिल रह जाये और जितनी (कैपेबिलिटी) इसमें तरक्की करने की है, होने की है, विकसित होने की है अगर न हो मेरी कुरबत से और मेरी नजदीकी से तो मेरे लिये शर्म की बात होगी कि ईश्वर जैसा वजूद और उसका, जीवात्मा, जो पुत्रवत् है, उसके पास रहे, और परमात्मा को खबर हो कि यह कम इल्म है, महदूदुल इल्म है, और मैं सर्वज्ञ हूँ, सब कुछ जानने वाला हूँ और फिर भी खाली बैठा रहे और फिर अपने वजूद को सफल न करे और अपने ज्ञान को सफल करके उसको विद्वान् न बनाये, यह कैसे हो सकता है?

खानदान में बाप के लिये भी बड़ा भारी उपालम्भ और उलाहना होता है और लोग शिकायत करते हैं कि आपका बेटा ? आप इतने बड़े विद्वान् हैं और आपका बच्चा जाहिल रह गया, क्या वजह? इसका कोई कारण तो होना चाहिये।

इसलिये कहते हैं, परमात्मा चूंकि हमेशा से जानता है इस बात को, कि मेरा अपना इल्म सफलता जीवात्मा के होने से ही है। मैं तो केवल इतना कह सकता हूँ कि जीवात्मा न हो और प्रकृति न हो तो ईश्वर भी नहीं होगा, बल्कि न होने के बराबर होगा। किसके लिये होगा फिर यह? अगर प्रकृति नहीं तो अपनी कारीगरी काहे में दिखाये?

यह जगत् गूंनगूं प्रकार का बनाया है, देख-देख कर आदमी आश्चर्य करते हैं। जरा चले मछलियों को ही देख लें मुंबई के अन्दर, उस जगह चले जायें, जहाँ बहुत सी चीजें परमात्मा की बनाई हुई, उन्होंने इकट्ठी क़ी हुई हैं कारीगर को दिखाने के लिये।

वहाँ आदमी जान लेगा कि इतनी कारीगरी भगवान् में होते हुए कैसे जाहिर किया प्रकृति के जरिये से। और वह जीवात्मा, जो थोड़ा सा इल्म ले सका है, जो थोड़ा सा ज्ञान भगवान् से ले सका है उससे कितने-2 करिश्मे कर रहा है? यह मौजूद है (माइक्रो फोन) और साथ ही यह चीज (टेपरिकार्डर) मौजूद है। मैं बोल रहा हूँ और बराबर इसके अन्दर रिकार्ड होता चला आ रहा है।

क्या चीज है? जरा समझ लीजिए। इन्सान, उसकी क्या हस्ती है? लेकिन ईश्वर का ज्ञान जिस मिकदार में इन्सान को प्राप्त हुआ है कि कितनी बड़ी तरक्की होती चली आ रही है। टेलीविजन अब आ गया है, जिससे आप व्याख्यान देने वाले को लाखों मील दूर होते हुए भी देख लेंगे और उसके व्याख्यान को भी सुन लेंगे। वह चाहे कितने ही फासले पर क्यों न हो?

क्या चीज है यह? यह है कि भगवान् से जो कुछ लिया है (मुस्तआर) उधार मांग कर जो इल्म

thearyasamaj.org

लिया हुआ है, उस इल्म का यह करिश्मा है, जिससे लिया है उसके अन्दर कितना होना चाहिये? इसका अनुमान कीजिये।

इस वास्ते इस बिना पर कि परमात्मा के पास हमेशा से जीवात्मा है और प्रकृति भी हमेशा से है, यह देखकर वह खाली कैसे बैठा रहे? खाली बैठने के लिये लोग क्या कहा करते हैं? **"खाली बैठना शैतान की दुकान है।"** इसलिये हमेशा से खुदा खाली नहीं बैठा हुआ है। यह सवाल हम मुसलमानों से किया करते हैं। **"आप यह बताइये कि जब अकेला खुदा ही खुदा था और कोई नहीं था–वह ऐसा मानते हैं कि सिवाय ईश्वर के कोई नहीं था"**

"कानल्लह व लम् यकुल्लहू शैआ"

अर्थात् अल्लाह था और उसके साथ कोई नहीं था। जब साथ कोई नहीं था तो खुदा किसके लिये था? कोई तो कहते हैं **"उसने अपनी कुदरत को दिखाने के लिये दुनिया पैदा की"** हम पूछते हैं कि–**"किसको दिखाने के लिये?"**

जिसको दिखाना है वह तो पैदा ही नहीं हुआ था। जिसको दिखाना है वह तो पहिले होना चाहिये, नहीं है तो किसको दिखाता? कोई शय मौजूद होनी चाहिये जिसको दिखाना चाहते थे? जब कोई मौजूद नहीं था तो किसको दिखाने के लिये दुनिया बनाई?

देखिये कुर्आन में आया है

"माखलकतुल्जिन्न वल् इन्सा इल्लालि या बुदून्"

हमने जिन्न व इन्सानों को अपनी इबादत के लिये बनाया, अपनी उपासना के लिये बनाया। बात अच्छी है लेकिन फिर उसने पूछा कि **"अपनी उपासना कराने से पहिले उसकी क्या हालत थी?"** क्या वह चाहता था कि मेरी उपासना हो, अगर वह यह चाहता था तो इतने वक्त तक बगैर उपासकों के कैसे रहा?

क्यों नहीं पैदा किये उसने अपने उपासक? अपने आबिद जो उसकी इबादत करते? क्यों खामोश रहा? क्या वजह थी जिसकी वजह से बेकार रहा? क्या चीज थी जिसकी वजह से वह असमर्थ रहा? इसका कोई न कोई कारण होना चाहिये?

क्या करता था वह उससे पहिले? ऐसे बहुत से ऐतराज पैदा हो जाते हैं। लेकिन यहाँ वैदिक धर्म में नहीं होते। जो पूछेगा **"परमात्मा दुनियां बनाने से पहले क्या कर रहा था"**? उत्तर होगा **"प्रलय कर रहा था।"** दिन से पहिले क्या है? बोले **"रात"** और रात से पहिले क्या है? **"दिन"**।

अब इस समय रात में क्या कर रहा है ईश्वर? यह कर रहा है कि रात बढ़ रही है, बारह बजे तक रात बढ़ेगी और बारह बजे के बाद दिन शुरू हो जायेगा। क्या कोई ऐसा वक्त है इस रात और दिन में कि जहां कोई कम और ज्यादा न हो रहा है? रात के बारह बजे दिन बढ़ने लगेगा और दिन के बारह बजे फिर रात शुरू होने लगेगी और रात के बारह बजे तक बढ़ेगी।

thearyasamaj.org

कोई वक्त भी घटने और बढ़ने से खाली नहीं है। इसी तरह भगवान् हमेशा से दुनियां को पैदा करता है और फनां करता है, और यही काम सदा से चला आ रहा है।

यह जो सवाल बीच में मैंने आपके सामने पेश किया था, उसके बारे में बहुत से आदमी पूछा करते हैं कि **"सरदर्दी ईश्वर ने क्यों मोल ली है"**? मैंने कहा **"सरदर्दी ईश्वर के लिये नहीं है"**। इसके तीन बजूहात हैं। वे ये हैं–

(1) ज्ञान की कमी (2) पहुँच की कमी (3) शक्ति की कमी।

कहीं देख लीजिये, एक आदमी कहता है, **"महाराज पण्डित जी मेहरबानी करके हमारी मदद कीजिये, आप विद्वान् हैं और हम विद्वान् नहीं हैं इसलिये आप जानते हैं, हम नहीं जानते हैं। इस सम्बन्ध में आप हमारा सहारा बन जाइये।"** एक बात।

दूसरे कहते हैं कि हमारी पहुँच नहीं है, वहाँ तक आपकी पहुँच है, आपकी मुलाकात है, हमारी नहीं है। पहुँच ना होने के कारण हमारा काम नहीं हो रहा है। इसलिये कहते हैं कि यह कमी दूसरी बात है।

अब लीजिए तीसरी बात है क्या है? हममें इतनी शक्ति नहीं है, हममें ताकत नहीं है। तो बोले तीन बातों की वजह से आदमी मजबूर है। ताकत न होने की वजह से, इल्म न होने की वजह से और पहुँच न होने की वजह से।

परमात्मा में तीनों कमियाँ नहीं हैं, तीनों पूर्णतायें हैं। वह हर जगह मौजूद है, कोई जगह उससे खाली नहीं है, हर जगह उसकी पहुँच है, कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहाँ उसकी पहुँच नहीं है? वह प्रत्येक चीज के अन्दर व्यापक है, छोटी से छोटी चीज में भी व्यापक है, हर जगह उसकी पहुँच है।

उसे यह परेशानी नहीं। सर्वशक्तिमान है वह। कोई ऐसी चीज नहीं है जो उसकी पहुँच में न हो। फिर सर्वज्ञ है, सब कुछ जानने वाला है, कोई चीज उसके इल्म से छिपी नहीं है। चूंकि यह तीनों बातें भगवान् में नहीं हैं, मनुष्य में हैं, इसलिये मनुष्य अपने खयाल से कह देता है कि **"यह सरदर्दी क्यों मोल ली है"**? वर्ना कोई सरदर्दी नहीं है।

उसके लिये निहायत खुशी की चीज है, क्योंकि उसका होना सफल हो रहा है। कोई उसे मुश्किल नहीं है। इस तरह पर जैसे हम सांस लेते हैं। आप काम करते हैं, सब कुछ करते हैं लेकिन यह बहुत कम ख्याल करते हैं कि हम सांस ले रहे हैं। जैसे सहज स्वभाव से हम सांस लेते हैं।

शास्त्र में लिखा है कि **"परमात्मा इसी तरह जगत की उत्पत्ति करता है"**। उसके ऊपर कोई बोझ नहीं है, कोई भार नहीं है, कोई मुश्किल नहीं है, कोई सरदर्दी नहीं है। इस वास्ते जिन लोगों ने यह सवाल किया, गलती की। भगवान अपने वजूद को सफल कैसे करे अगर यह चीज न हो तो? इसलिये कहते हैं अपने वजूद को सफल करता है और अपने इल्म के आधार पर ही कार्य कर रहा है।

वही अहमद मसीह साहिब जिनका मैंने जिक्र किया था कि ईसाई धर्म के प्रचारक थे, गुजर गये बेचारे, बड़े लायक आदमी थे। उन्होंने सवाल किया एक दफा मुझसे कि **"पण्डित जी क्या दरख्वास्त दी थी जीवात्मा ने खुदा से, कि आप हमें दुनियां में भेजिये और हम सुकर्म करेंगे या कुकर्म करेंगे तो आप हमें फल दीजिये? क्या उसने तकरीरी या तहरीरी अर्जी पेश की थी"**?

–(शेष अगले अंक में)

thearyasamaj.org

वृन्दावन के ब्रह्मचारियों ने संगीत के माध्यम से ऋषि महिमा के गीत प्रस्तुत किये। छोटे ब्रह्मचारियों के प्रयास को सभी ने उत्साह प्रदान किया। निश्चित ही ब्रह्मचारी राष्ट्र के भविष्य हैं, महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करेंगे। सत्संग के बाद प्रसाद ग्रहण सबने किया, उसके बाद आर्यसमाज तिलकद्वार मथुरा के लिए सभी ने प्रस्थान किया।

आर्यसमाज तिलकद्वार से भव्य शोभायात्रा निकाली गई। तिलकद्वार आर्यसमाज के मंत्री श्री कृष्णगोपाल गुप्ताजी ने शोभायात्रा का नेतृत्व किया। इस शोभायात्रा में महर्षि दयानन्द इण्टर कॉलिज खुशीपुरा की छात्रायें, आर्य कन्या इण्टर कॉलिज मथुरा की छात्रायें, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के ब्रह्मचारियों ने सहभागिता की। मथुरा के गणमान्य नागरिकों ने सभी आर्यों व विद्यालयों के विद्यार्थियों का शोभायात्रा में जगह-जगह भव्य स्वागत किया, जगह-जगह पुष्प वर्षा की, प्रसाद के रूप में फलों आदि के वितरण की व्यवस्था की। पुलिस प्रशासन का पूरा सहयोग रहा। शोभायात्रा का समापन नगर के विभिन्न मार्गों से चलता हुआ तिलकद्वार पर हुआ। माननीय कृष्णगोपाल गुप्ता जी ने शोभायात्रा के सहयोग के लिए सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

इस पूरे कार्यक्रम में श्री भगतसिंह वर्मा पूर्व आई.ए.एस., प्रेमसिंह जादौन, भगवानदेव वानप्रस्थ, पं0 विपिनबिहारी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मथुरा, श्री बृजकिशोर जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मथुरा, श्री अनूपसिंह चौधरी अध्यक्ष जिला पंचायत मथुरा, शिव वर्मा, श्री भुवनेशजी, श्री रघुवीर जी, श्री हरीसिंह जी आर्यसमाज बलरई, श्री राकेश जी, श्री जयप्रकाश शास्त्री, श्री अशोक कुमार एवं नगलाकेशिया की माताऐं, बहिनें एवं बच्चे, आर्यसमाज कोंकेरा के सदस्य, आर्यसमाज नौगाँव के सदस्य, कैप्टन जयपालसिंह, श्री सत्यप्रिय जी एवं समस्त आर्यसमाज ऊँचागाँव के सदस्य, विनोद चौधरी बाजना वाले, समस्त आर्यवीर दल मथुरा जनपद, आर्यसमाज छाता, कोसी आर्यसमाज, अनौड़ा आर्यसमाज, आर्यसमाज फरह, आर्यसमाज सौंख, आर्यसमाज अडींग, आर्यसमाज हकीमपुर, नौधरा, लालपुर, खायरा आदि के सदस्य उत्साह सहित उपस्थित हुए। विरजानन्द ट्रस्ट की ओर से सभी को धन्यवाद दिया गया।

श्री विरजानन्द ट्रस्ट के पदाधिकारी श्री सत्यप्रकाश जी, मंत्री बृजभूषण जी अग्रवाल तथा अन्य सभी सदस्यों का सर्वात्मा सहयोग रहा। आशा है शीघ्र ही वेदमन्दिर में उत्साहपूर्वक अन्य गतिविधियाँ भी ईश कृपा से और अधिक व्यवस्थित हो चलेगी। दानी लोगों की उदारता से सभा-भवन, गोशाला, यज्ञशाला बन के तैयार है। प्रकाशन के कायाकल्प की पूरी तैयारी है, शीघ्र ही प्रकाशन भी आप लोगों को नया रूप में दिखाई देगा। इसके लिए प्रभु का धन्यवाद। सभी दानदाताओं का विशेष धन्यवाद है।

❀❀❀

thearyasamaj.org

'तपोभूमि' मार्च 2015 R.N.I. No. 2321/57 रजि. सं. MTR नं. 04/2013-15

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण (प्रेस में)	
शंकर सर्वस्व	120.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00
नारी सर्वस्व	60.00
शुद्ध कृष्णायण	50.00
शुद्ध हनुमच्चरित (प्रेस में)	
महाभारत के प्रेरक प्रसंग	40.00
विदुर नीति	40.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00
चाणक्य नीति	40.00
वेद प्रभा	30.00
शान्ति कथा	30.00
नित्य कर्म विधि	30.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00
बाल सत्यार्थ प्रकाश (प्रेस में)	
यज्ञमय जीवन (प्रेस में)	
दो बहिनों की बातें	25.00
दो मित्रों की बातें	25.00
मील का पत्थर (प्रेस में)	
सुमंगली (प्रेस में)	
शुद्ध सत्यनारायण कथा	10.00
महिला गीतांजलि	10.00
क्या भूत होते हैं	10.00
आर्यों की दिनचर्या	10.00
महाभारत के कृष्ण	8.00
ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00
सच्चे गुच्छे	8.00
मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00
नवग्रह समीक्षा	6.00
आर्यसमाज और श्रीराम	6.00
आचार्य श्रीराम शर्मा : एक सरल चिन्तन	5.00
वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00
गायत्री गौरव	5.00
महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
सफल व्यक्तित्व	5.00
सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	5.00
मुक्ति प्रदाता त्रिवेणी	5.00
जीजा साले की बातें	5.00
भागवत के नमकीन चुटकुले	5.00
आदर्श पत्नी	5.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2015 के लिये वार्षिक शुल्क 150/- रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/- भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक-पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :-
व्यवस्थापक - कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर- गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मो. 9759804182

Yogendra # 9927136600

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए रमेश प्रिन्टिग प्रेस, पंचवटी, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित